हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार 8 मार्च 2026

11 पाठ पढ़ो, याद करो, सुनाओ और इनाम पाओ : विनोद

12 सीटिंग 9 जमा एक,क्रूजर में बैठाए 19 प्लस वन विद्यार्थी

विधायक वाल्मीकि ने जूस पिलाकर ग्रामीणों का धरना करवाया खत्म

दो माह में होगा अंडरपास की समस्या का समाधान, धरनास्थल पर पहुंचे विधायक

ग्रामीणों ने दी चेतावनी: अप्रैल में समस्या का समाधान नहीं हुआ तो मई में रोकेंगे रेलगाड़ियां

गांव लोहारी जाटू में रेलवे की सी 60 व सी 62 अंडर पास में भरा है चार से पांच फुट पानी

इन दोनों रास्तों से गांव सूई, बलियाली, रामूपुरा सहति अन्य तीन-चार गांवों के लिंक मार्ग जुड़ें हैं

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी/बवानीखेड़ा

करीब दो सप्ताह से गांव लोहारी जाटू के अंडरपास में भरे पानी की निकासी की मांग को लेकर धरनारत ग्रामीणों ने विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि व रेल अधिकारियों को भरोसे के बाद धरना खत्म करने का ऐलान कर दिया। साथ ही ग्रामीणों ने चेतावनी दी कि अगर मई माह तक उनकी इस समस्या का समाधान नहीं हुआ तो वे रेल रोकने से पीछे नहीं हटेंगे।

वहीं इस दौरान विधायक वाल्मीकि ने भरोसा दिलाया कि वे इस समस्या को लेकर विगत से सीएम नायब सिंह सैनी से भी मिले थे और अब बीकानेर मंडल में भी बातचीत हुई है। उन्होंने कहा कि अप्रैल माह में इस समस्या के समाधान के लिए कार्य शुरू करवा दिया जाएगा। अगर समस्या का समाधान बातों में ही रहा तो वे खुद इस समस्या के लिए उनके साथ खड़े मिलेंगे। वे चंडीगढ में सीएम तथां दिल्ली में जाकर रेलमंत्री से

भी मुलाकात करेंगे। उन्होंने बताया कि रेल अधिकारियों ने इस समस्या का समाधान नई तकनीकी से करने का जो भरोसा दिया है। उस योजना का टेंडर हो चुका है और अप्रैल माह तक कार्य शुरू होने की उम्मीद है। उसके बाद अंडरपास में भूमिगत पानी की समस्या नहीं रहेगी। यहां यह बताते चले कि गांव लोहारी जाटू में रेलवे की सी 60 व सी 62 में भूमिगत पानी जमा होने से करीब चार से पांच फुट तक पानी जमा हो जाता है। जिस वजह से किसानों के खेतों का रास्ता पूरी तरह से बंद रहता है। इसी समस्या के समाधान के लिए करीब दो सप्ताह पहले ग्रामीणों ने इसी जगह पर धरना शुरू किया था। इन दोनों रास्तों से गांव सूई, बलियाली, रामूपुरा के अलावा अन्य तीन-चार गांवों के लिंक मार्ग जुड़ते है। अब पानी जमा होने की वजह से वाहन चालकों को बवानीखेड़ा होकर इन गांवों में जाना पड़ रहा है। इस मौके पर कामरेड ओमप्रकाश, राजेश कूंगड, सरपंच प्रतिनिधि मुकेश, पूर्व सरपंच जयदे व जाटू लोहारी के ग्रामीण मौजूद थे।

बिल्कुल नई तकनीक

रेल विभाग के एडीआरएम ओमप्रकाश ने बताया कि उन्होंने इस मामले की जानकारी रेलवे विभाग के आला अधिकारियों को पास भेज दी है। जिसके चलते आला अधिकारियों ने उक्त दोनों अंडरपास में उगल रहे भूमिगत पानी को एपॉक्सी ग्राउटिंग से रोकने का फैसला लिया है। यह तकनीकी बिल्कुल नई है। इस तकनीकी के लागू करने के बाद भूमिगत पानी बाहर नहीं आएगी। इस तकनीक के जरिए अंडरपास का पानी बंद करने के लिए रेल विभाग ने टेंडर जारी कर दिया है। जो कि अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह तक खुलने की उम्मीद है। उसके बाद तत्काल कार्य शुरू हो जाएगा। इस तकनीक के तहत यह कार्य करीब चार से पांच माह में पूरा होगा।

विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि ने बताया कि उन्होंने दोनों अंडरपास का मामला विधानसभा में भी लगाया हुआ था। समय कम मिला उठा नहीं पाया,लेकिन बाद में सीएम नायाब सिंह सैनी से मिला था और उन्होंने भरोसा दिलाया कि जो प्रदेश सरकार से बन पड़ेगा वह कार्य पूरा करवाएंगे।

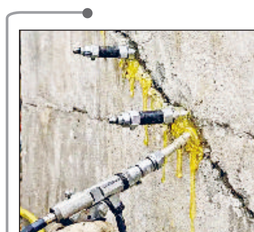

एपॉक्सी ग्राउटिंग होगी

भूमिगत पानी को रोकने के लिए फर्श या अन्य किसी जगह पर पहले छेद किए जाते हैं। उन छेदों में सीमेंट की बजाए एपॉक्सी रेजिन, हार्डनर और फिलर पाउडर का मिश्रण का उपयोग किया जाता है। उन छेदों से इस मिश्रण का घोल बनाकर प्रेशर की मशीन से डाला जाता है। जिस जगह पर यह डाला जाता है। वह छीद्र के जरिए नीचे जाकर फैल जाता है और पर्त बन जाती है। वह पर्त भूमिगत पानी को उपर नहीं आने देती है। जिससे वह जगह पानी, दाग धब्बे व एसिड प्रतिरोधी हो जाती है।

भिवानी। अवैध कॉलोनी में निर्माण तोड़ती जेसीबी। फोटो : हरिभूमि

पाइपलाइन तथा कच्चे रोड नेटवर्क और 31 डीपीसी को जेसीबी से तोड़ा

ड्यूटी मजिस्ट्रेट देवेन्द्र सिंह की मौजूदगी में की कार्रवाई

भिवानी कोट रोड पर लगभग तीन एकड़ में फैली है अवैध कॉलोनी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

डीसी साहिल गुप्ता के निर्देशानुसार शहरी क्षेत्र भिवानी के अनियंत्रित क्षेत्र में मौजा भिवानी जोनपाल में भिवानी कोंट-रोड पर अवैध कॉलोनियों और निर्माण के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की। जिला नगर योजनाकार कार्यालय द्वारा निर्धारित कार्यक्रम के तहत विशेष अभियान चलाया कर जेसीबी से अवैध निर्माण हटाया गया।

जिला नगर योजनाकार नरेंद्र कुमार और ड्यूटी मजिस्ट्रेट देवेन्द्र सिंह की मौजूदगी में पुलिस टीम के साथ भिवानी कोट रोड़ पर लगभग तीन एकड़ में फैली अवैध कॉलोनी में किए गए निर्माण को हटाया। इस दौरान कॉलोनी में बिछाई गई सीवरेज पाइपलाइन, पानी की पाइपलाइन तथा कच्चे रोड नेटवर्क व 31 डीपीसी को जेसीबी मशीन से तोड़ा गया।

जिला नगर योजनाकार ने लोगों को चेतावनी देते हुए कहा कि अवैध कॉलोनियों में प्रॉपर्टी डीलिंग करना, प्लॉट खरीदना या बेचना नियमों के विरुद्ध है। साथ ही नियमित एवं अनुमोदित सडक़ों की हरित पट्टी में किसी भी प्रकार का निर्माण कार्य न करने की भी हिदायत दी गई। उन्होंने कहा कि भविष्य में भी अवैध कॉलोनियों और निर्माण के खिलाफ इसी प्रकार कार्रवाई जारी रहेगी। उन्होंने लोगों से अपील की है कि किसी भी प्रकार की प्रॉपर्टी खरीदने से पहले उसकी वैधता की जांच अवश्य करें।

खबर संक्षेप

शीतला माता मंदिर में रात्रि जागरण आज

लोहारू। कस्बे के पुराना शहर स्थित शीतला माता मंदिर परिसर में 8 मार्च की रात को जागरण का आयोजन किया जाएगा। शहीद भगत सिंह समाज कल्याण समिति के प्रधान जगदीश जायलवाल ने बताया कि कस्बे प्राचीन शीतला माता मंदिर में पहली बार आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में गायक भजनों के माध्यम से शीतला माता और विभिन्न देवी देवताओं की महिमा का गुणगान करेंगे।

नेटबॉल चैंपियनशिप के लिए ट्रायल नौ से

भिवानी। हांगकांग में होने वाली 14वीं एशियाई नेटबॉल चैंपियनशिप (महिला) की ट्रायल कैंप की घोषणा कर दी है। हरियाणा नेटबॉल एसो. की महासचिव बबीता दहिया ने बताया कि 14वीं एशियाई नेटबॉल चैंपियनशिप 7 से 16 अगस्त तक होगी। चैंपियनशिप में भारत की महिलाओं की टीमें हिस्सा लेंगी और खिताब के लिए दावेदारी पेश करेंगी। उन्होंने बताया कि अंतरराष्ट्रीय स्तर की चैंपियनशिप के लिए बेहतरीन खिलाड़ियों के चयन और प्रशिक्षण के लिए विशेष कैंप आयोजित किया जा रहा है। पहला ट्रायल कैंप की प्रक्रिया 9 मार्च को शुरू होगी। खिलाड़ियों को हरियाणा खेल विश्वविद्यालय राई सोनीपत में रिपोर्ट करना होगा। ट्रायल कैंप 9 मार्च से 22 मार्च तक चलेगा। ट्रायल में प्रदर्शन के आधार पर खिलाड़ी कैंप का हिस्सा बन सकेंगे और आगे टीम में जगह बना पाएंगे।

कलाकार युवा पीढ़ी को संस्कारों और संस्कृति से करवाता अवगतः हुनमान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

- चंडीगढ़ रागनी उत्सव में दिखेगी हरियाणवी संस्कृति की झलक
- मनीमाजरा में 12 से 15 मार्च तक होगा आयोजन

चण्डीगढ़ के कलाग्राम मनीमाजरा में संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के आदेशानुसार उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र पटियाला द्वारा 12 से 15 मार्च तक आयोजित चार दिवसीय रागनी उत्सव में इंद्रजीत कुंडलिया संस्कृति रतन अवार्ड से सम्मानित, कप्तान बिसानिया संस्कृति गौरव अवार्डी, राकेश भराणिया अंतरराष्ट्रीय कलाकार, सुरेन्द्र शर्मा गिगनाऊ हरियाणा केसरी समेत अनेक कलाकार अपनी टीम के साथ रागनियों के माध्यम से हरियाणा की संस्कृति का प्रदर्शन करेंगे। ये बात म्हारी संस्कृति म्हारा स्वाभिमान संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष हनुमान कौशिक ने कलाकारों को बधाई देते हुए कही। उन्होंने कहा कि एक कलाकार ही युवा पीढ़ी को संस्कारों व संस्कृति से अवगत करवा सकता है।

सीजेएम ने बाल सेवा आश्रम तथा सखी वन स्टॉप सेंटर में साफ-सफाई, सुरक्षा व्यवस्था व भोजन की गुणवत्ता जांची

- जिला एवं सत्र न्यायाधीश डीआर चालिया के निर्देश पर किया औचक निरीक्षण

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण के चेयरमैन एवं जिला एवं सत्र न्यायाधीश डीआर चालिया के निर्देशानुसार प्राधिकरण के सचिव एवं मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी (सीजेएम) पवन कुमार ने भिवानी स्थित बाल सेवा आश्रम तथा सखी वन स्टॉप सेंटर का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण का मुख्य उद्देश्य संस्थानों में रह रहे बच्चों व महिलाओं को उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं का जायजा लेना तथा व्यवस्थाओं को और बेहतर बनाने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश देना था। निरीक्षण के दौरान संस्थान प्रबंधकों ने सीजेएम को संस्थानों की कार्यप्रणाली के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

विशेष ध्यान रखें

निरीक्षण के दौरान सीजेएम पवन कुमार ने दोनों संस्थानों में उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं, साफ-सफाई, सुरक्षा व्यवस्था, भोजन की गुणवत्ता तथा रहने की व्यवस्थाओं का बारीकी से निरीक्षण किया। उन्होंने संबंधित अधिकारियों व कर्मचारियों से संस्थान में रह रहे बच्चों और महिलाओं को दी जा रही सेवाओं के बारे में विस्तार से जानकारी ली और आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। सीजेएम पवन कुमार ने कहा कि बाल सेवा आश्रम में रह रहे बच्चों को सुरक्षित, स्वच्छ और सकारात्मक वातावरण प्रदान करना अत्यंत आवश्यक है, ताकि उनका शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास बेहतर ढंग से हो सके। उन्होंने आश्रम के कर्मचारियों से बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य तथा पोषण संबंधी व्यवस्थाओं का विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए।

सेफ हाउस में सीजेएम ने युगल जोड़ों को दी जाने वाली सेवा के बारे में जानकारी दी

भिवानी। सीजेएम-कम-सचिव सीजेएम पवन कुमार ने सेफ हाउस का औचक निरीक्षण किया। जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण के सचिव एवं सीजेएम सीजेएम पवन कुमार ने पुलिस लाइन परिसर में स्थित सेफ हाउस का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान वहां पर भी साफ-सफाई, रहन-सहन, पीने के पानी की व्यवस्था, भोजनालय का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान सेफ हाउस के युगल जोड़ों को प्राधिकरण द्वारा दी जाने वाली सेवा के बारे में विस्तार से जानकारी दी। सीजेएम सीजेएम पवन कुमार ने सेफ हाउस के इंचार्ज को यहां आने वालो की स्वास्थ्य जांच व पौष्टिक भोजन देने और इनकी सुरक्षा का विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए। इस अवसर पर सेफ हाउस का स्टाफ मौजूद रहा।

विधायक ने सुनीं जनसमस्याएं

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

विधायक सुनील सांगवान ने शनिवार को अपने दादरी स्थित आवास पर आमजन से सीधे संवाद कर उनकी जन समस्याएं सुनीं।

इस दौरान गांव समसपुर के पूर्व सरपंच कृष्ण कुमार ने कांग्रेस छोड़कर भारतीय जनता पार्टी का दामन थाम लिया। विधायक सुनील सांगवान ने उन्हें पार्टी का पटका पहनाकर भाजपा में शामिल कराया और पार्टी में उनका स्वागत किया। विधायक सुनील सांगवान ने कहा कि उनका संकल्प है कि क्षेत्र के किसी भी नागरिक को अपनी मूलभूत समस्याओं के समाधान के

भिवानी। जनसमस्या सुनते विधायक सुनील सांगवान । फोटो : हरिभूमि

लिए अनावश्यक प्रतीक्षा न करनी पड़े। उनके लिए राजनीति केवल पद प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि जनसेवा का एक पवित्र दायित्व है।

हलके की जनता का विश्वास और सहयोग ही उनकी सबसे बड़ी शक्ति है और उसी के बल पर वे क्षेत्र के विकास के लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं। विधायक ने पूर्व सरपंच कृष्ण कुमार को पार्टी ज्वाइन कराई और कहा कि पार्टी में शामिल होने वाले कार्यकर्ताओं को पूरा सम्मान दिया जाएगा और सभी मिलकर क्षेत्र के विकास के लिए कार्य करेंगे।

अवैध तलवार के साथ युवक किया गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

चरखी दादरी पुलिस ने एक युवक को अवैध तलवार के साथ गिरफ्तार किया है। आरोपी को कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया गया। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि शुक्रवार को सूचना मिली कि एक युवक लोहारू चौक पर तलवार लेकर घूम रहा है।सूचना मिलते पुलिस टीम ने लोहारू चौक पर दबिश दी। जहां एक युवक खड़ा दिखाई दिया, जो पुलिस को देखकर भगाने लगा। पुलिस ने युवक को काबू कर लिया। तलाशी लेने पर के कपड़ों के अंदर

से एक लोहे की तलवार बरामद हुई। आरोपी की पहचान हिसार जिला के गांव सोरखी निवासी कमल के रूप में हुई है। पूछताछ के बाद आरोपी को कोर्ट में पेश किया गया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

गांव जाटू लोहारी में निःशुल्क मेडिकल-रक्तदान शिविर आज

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में तथा ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के उद्देश्य से 8 मार्च रविवार को बाबा जगन्नाथ धाम मंदिर, जाटू लोहारी में निःशुल्क मेडिकल एवं रक्तदान कैम्प का आयोजन किया जा रहा है।

इस शिविर में अंचल मल्टीस्पेशियलिटी हॉस्पिटल भिवानी व मेंदाता हस्पताल गुरूग्राम के विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम पूर्व सैनिक, परिवारों एवं समस्त ग्रामीणों के लिए अपनी सेवाएं देगी। यह जानकारी देते हुए अंचल मल्टीस्पेशियलिटी हॉस्पिटल के संचालक डा. विनोद अंचल ने बताया कि कैंप की शुरुआत सुबह 8 बजे से 10 बजे तक आयोजित होने वाले रक्तदान शिविर से होगी। रक्तदान महादान के संदेश के साथ बताया गया कि एक व्यक्ति द्वारा किया गया रक्तदान तीन लोगों का जीवन बचा सकता है। उन्होंने बताया कि सुबह 10 बजे से दोपहर 3 बजे तक चलने वाले मेडिकल कैम्प में मरीजों को आधुनिक मशीनों द्वारा मुफ्त जांच की सुविधा मिलेगी।

बधवाना डिस्ट्रीब्यूटरी सूखी, अंतिम छोर तक पानी नहीं पहुंच रहा

दादरी जिले के 20 गांवों के लोग बूंद-बूंद को तरसे

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

चरखी दादरी जिले में पेयजल एवं सिंचाई संकट गहराता जा रहा है। शहर व आसपास के लगभग 20 गांवों की लाइफ लाइन कही जाने वाली बधवाना डिस्ट्रीब्यूटर इन दिनों प्रशासनिक उपेक्षा एवं कुप्रबंधन का शिकार है।

हालात इतने बदतर हो चुके हैं कि इंसान तो दूर मवेशी भी खारा पानी पीने को मजबूर हैं। भारतीय जनता पार्टी विधि प्रकोष्ठ के जिला संयोजक अधिवक्ता कुलवंत

फौगाट का आरोप है कि सरकारी रिकॉर्ड में उक्त नहर को नियमित रूप से चलता दिखाया जा रहा है, लेकिन वास्तविकता इसके उलट है। उन्होंने कहा कि जल्द नहर में पानी नहीं छोड़ा गया तो आने वाली गर्मियों में स्थिति और भी भयावह रूप ले लेगी।

नहर में पानी न आने से जलघरों के पड़े हैं टैंक खाली

फौगाट ने कहा कि पहले उक्त नहर में महीने में 15 दिन पानी आता था, अब अवधि घटकर 30 दिनों के अंतराल पर महज 8-10 दिन रह गई है। उनका दावा है कि जब भी नहर में पानी छोड़ा जाता है, तो उसे बीच रास्ते में दूसरी नहरों की ओर मोड़ दिया जाता है। इसके चलते टेल अंतिम छोर तक पानी नहीं पहुंच पा रहा है। नहर में पानी न आने से जलघरों के टैंक खाली पड़े हैं। विकल्प न होने के कारण जनता को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि लोगों को मजबूरन खारा पानी पीने से लोग पेट और चर्म रोगों की चपेट में आ रहे हैं, मध्यम और गरीब परिवारों को पीने के पानी के लिए महंगे निजी टैंकरों पर निर्भर होना पड़ रहा है। वहीं गांवों में जोहड़ सूख चुके हैं और खारे पानी के कारण पशुओं का स्वास्थ्य गिर रहा है, जिससे दूध उत्पादन पर भी असर पड़ा है। क्षेत्र के किसानों और नागरिकों ने प्रदेश की सिंचाई मंत्री श्रुति चौधरी से मामले में हस्तक्षेप करने की मांग की है। उन्होंने मांग की कि बधवाना डिस्ट्रीब्यूटर की सफाई और क्षमता विस्तार किया जाए, नहर के पानी का न्याय संगत बंटवारा सुनिश्चित हो, ताकि दादरी शहर और 20 गांवों को उनका हक मिले।

प्ले स्कूल के लिए एचबीएसई और सीबीएसई से भी लेनी होगी मान्यता

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

- तीन से छह वर्ष के बच्चों की कक्षाएं चलाने वाले निजी प्ले स्कूलों के लिए सख्त निर्देश

महिला एवं बाल विकास विभाग ने जिले के सभी निजी प्ले स्कूलों के लिए महत्वपूर्ण सूचना जारी की है। विभाग ने स्पष्ट किया है कि 3 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए नर्सरी, एलकेजी और यूकेजी की कक्षाएं संचालित करने वाले प्रत्येक प्ले स्कूल को महिला एवं बाल विकास विभाग से मान्यता प्राप्त करना अनिवार्य है।

जिला कार्यक्रम अधिकारी वैशाली ने बताया कि एचबीएसई और सीबीएसई द्वारा मान्यता प्राप्त वे स्कूल जो 3 से 6 वर्ष के बच्चों की कक्षाओं संचालन करते हैं, उनको अलग से महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा पंजीकृत करवाना अनिवार्य है। जिन स्कूलों ने पिछले वर्षों में विभाग से मान्यता प्राप्त कर ली थी, उन्हें इस वर्ष नियमानुसार अपनी मान्यता का नवीनीकरण करवाना अनिवार्य है। उन्होंने बताया कि मान्यता प्राप्त करने या उसे नवीनीकरण करवाने के लिए सभी स्कूल संचालक सरल पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। विभाग ने चेतावनी दी है कि पंजीकरण या नवीनीकरण की अंतिम तिथि 30 मार्च 2026 है। यदि इस तिथि तक किसी भी स्कूल ने मान्यता प्राप्त नहीं की, तो विभागीय आदेशों के तहत उन स्कूलों को सील कर तुरंत बंद कर दिया जाएगा। सभी निजी स्कूल संचालक भविष्य में किसी भी प्रशासनिक या कानूनी कार्रवाई से बचने के लिए समय रहते अपनी फाइलें पूर्ण कर विभाग से संपर्क करें।

30 से पहले समझ लें पैसे का खेल, वरना बाद में होगी मुश्किल!

कम उम्र में अपनाएं ये नियम, बनें आर्थिक रूप से मजबूत, निवेश की सही समय पर शुरुआत ही बनाती है अमीर

बिजनेस डेस्क

कम उम्र सपनों, करियर और नई शुरुआत का समय होती है। पहली नौकरी, पहली सैलरी और अपने फैसले लेने की आजादी — ये सब उत्साह से भरे होते हैं। लेकिन इसी दौर में पैसों को लेकर की गई छोटी-छोटी गलतियां आगे चलकर बड़ा वित्तीय बोझ बन सकती हैं। अक्सर युवा कमाई शुरू करते ही लाइफस्टाइल अपग्रेड कर लेते हैं, लेकिन बचत और निवेश को टालते रहते हैं। नतीजा यह होता है कि 30 की उम्र पार करते-करते जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं, मगर मजबूत फाइनेंशियल बेस नहीं बन पाता। अगर आप 30 की उम्र से पहले कुछ बुनियादी और असरदार वित्तीय नियम समझ लें, तो भविष्य आर्थिक रूप से सुरक्षित और तनावमुक्त बनाया जा सकता है। आइए जानते हैं ऐसे 5 जरूरी फाइनेंस रूल्स, जिन्हें हर युवा को अपनाना चाहिए।

1. 50/30/20 रूल: कमाई का सही बंटवारा

यह नियम बजट बनाने का सबसे आसान और कारगर तरीका माना जाता है। इसके अनुसार 50% आय जरूरी खर्चों पर (किराया, राशन, बिजली-पानी, बिल, ईएमआई), 30% आय इच्छाओं पर (घूमना-फिरना, मूवी, शॉपिंग, गैजेट्स) और 20% आय बचत या निवेश में लगानी चाहिए। अगर शुरुआत से ही इस फॉर्मूले को अपनाया जाए, तो खर्च नियंत्रण में रहता है और निवेश की आदत भी बनती है। कई युवा पूरी सैलरी खर्च कर देते हैं और महीने के अंत में बचत शून्य रह जाती है। 50/30/20 रूल आपको अनुशासन सिखाता है और "पहले बचत, फिर खर्च" की सोच विकसित करता है।

2. 20/4/10 कार रूल: गाड़ी का सपना

नई कार खरीदना लगभग हर युवा का सपना होता है। लेकिन कार लोन अक्सर लंबे समय तक वित्तीय दबाव बना देता है। ऐसे में 20/4/10 रूल बहुत काम आता है। कम से कम 20% डाउन पेमेंट करें, लोन की अवधि 4 साल से ज्यादा न रखें। आपकी मासिक आय का 10% से ज्यादा ईएमआई और कार खर्च पर न जाएं। इस नियम का मकसद यह है कि गाड़ी आपके लिए सुविधा बने, बोझ नहीं। लंबी अवधि का लोन लेने से ब्याज ज्यादा चुकाना पड़ता है और अन्य निवेश के अवसर छूट सकते हैं।

3. रूल ऑफ 72: कंपाउंडिंग की ताकत समझें

निवेश की दुनिया में "कंपाउंडिंग" सबसे बड़ा हथियार है। रूल ऑफ 72 आपको यह समझने में मदद करता है कि आपका पैसा कितने समय में दोगुना होगा। फॉर्मूला है: 72 ÷ ब्याज दर = पैसा डबल होने का समय (सालों में)। उदाहरण के लिए, अगर आपको 12% सालाना रिटर्न मिल रहा है तो 72 ÷ 12 = 6 साल यानी आपका निवेश लगभग 6 साल में दोगुना हो सकता है। यह नियम आपको जल्दी निवेश शुरू करने की प्रेरणा देता है। जितनी जल्दी शुरुआत करेंगे, कंपाउंडिंग का फायदा उतना ज्यादा मिलेगा।

4. 3–6 महीने का इमरजेंसी फंड : सुरक्षा कवच

जिंदगी अनिश्चितताओं से भरी है। अचानक नौकरी छूट जाए, मेडिकल इमरजेंसी आ जाए या कोई पारिवारिक संकट आ जाए। ऐसे समय में कर्ज लेने की नौबत न आए, इसके लिए इमरजेंसी फंड जरूरी है। आपको कम से कम 3 से 6 महीने के खर्च के बराबर रकम अलग से बचाकर रखनी चाहिए। यह रकम सेविंग अकाउंट या लिक्विड फंड जैसे सुरक्षित और आसानी से निकाले जा सकने वाले साधनों में होनी चाहिए। इमरजेंसी फंड आपको मानसिक शांति देता है और निवेश को बीच में तोड़ने से बचाता है।

5. रूल ऑफ 100: उम्र के अनुसार निवेश

निवेश में रिस्क और रिटर्न का संतुलन बेहद जरूरी है। रूल ऑफ 100 एक आसान फॉर्मूला देता है। 100 – आपकी उम्र = इक्विटी में निवेश का प्रतिशत। अगर आपकी उम्र 25 साल है। 100–25 = 75 यानी 75% निवेश शेयर बाजार या इक्विटी में और 25% सुरक्षित साधनों (FD, बॉन्ड आदि) में रखा जा सकता है। यह नियम युवाओं को ज्यादा जोखिम लेने की अनुमति देता है, क्योंकि उनके पास समय ज्यादा होता है और बाजार की गिरावट से उबरने का मौका भी।

क्यों जरूरी हैं ये फाइनेंस रूल्स?

- ये आपको खर्च और बचत का संतुलन सिखाते हैं
- कर्ज के जाल से बचाते हैं
- निवेश की आदत जल्दी डालते हैं
- भविष्य के बड़े लक्ष्यों (घर, शादी, रिटायरमेंट) के लिए तैयारी करवाते हैं
- आर्थिक तनाव कम करते हैं
- 30 की उम्र के बाद जिम्मेदारियां तेजी से बढ़ती हैं परिवार, बच्चों की पढ़ाई, घर का लोन, मेडिकल जरूरतें। अगर आपने 20s में मजबूत वित्तीय नींव रख ली, तो आगे का सफर आसान हो जाएगा।

आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर महिलाएं निवेश के फैसलों में बढ़ रही भागीदारी

अब 56% अब खुद ले रहीं फैसले फाइनेंशियल प्लानिंग में गैप

निवेश में महिलाओं का आत्मविश्वास और योजना बनाने में चुनौती बढ़ा

देश के 13 शहरों के 5,050 लोगों को शामिल किया गया, सर्वे में 25 से 60 वर्ष आयु वर्ग के ऐसे प्रतिभागियों को चुना गया

बिजनेस डेस्क

भारत में महिलाओं की आर्थिक भूमिका तेजी से बदल रही है। अब महिलाएं केवल कमाई तक सीमित नहीं हैं, बल्कि निवेश से जुड़े फैसलों में भी सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं। शहरी भारत में निवेश को लेकर महिलाओं का आत्मविश्वास लगातार बढ़ रहा है और बड़ी संख्या में महिलाएं अब अपने निवेश निर्णय खुद लेने लगी हैं। हालांकि निवेश में बढ़ती भागीदारी के बावजूद मजबूत और व्यवस्थित वित्तीय योजना के मामले में अभी भी बड़ा अंतर बना हुआ है। यह तस्वीर रिपोर्ट में सामने आई है। जिसे यूजीओवी के साथ मिलकर तैयार किया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक महिलाओं में निवेश के प्रति जागरूकता और स्वतंत्रता दोनों तेजी से बढ़ रही हैं, लेकिन वित्तीय लक्ष्य तय करने और दीर्घकालिक योजना बनाने में अभी भी सुधार की काफी गुंजाइश है। इस अध्ययन के लिए 2025 की चौथी तिमाही में देश के 13 शहरों के 5,050 लोगों को शामिल किया गया। सर्वे में 25 से 60 वर्ष आयु वर्ग के ऐसे प्रतिभागियों को चुना गया, जो अपने परिवार के निवेश संबंधी फैसलों में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। अध्ययन में पुरुषों और महिलाओं की संख्या बराबर रखी गई और इसका फोकस मुख्य रूप से शहरी और अपेक्षाकृत उच्च सामाजिक-आर्थिक वर्ग के परिवारों पर रहा।

अब महिलाएं खुद ले रही निवेश के फैसले

रिपोर्ट की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि निवेश के फैसलों में महिलाओं की स्वतंत्र भागीदारी तेजी से बढ़ी है। सर्वे के मुताबिक अब 56 फीसदी महिलाएं निवेश से जुड़े फैसले खुद ले रही हैं, जबकि 2022 में यह आंकड़ा 44 फीसदी था। यानी तीन साल में इसमें 12 फीसदी की उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है। वहीं, पुरुषों में यह आंकड़ा 68 फीसदी है, जो अब भी महिलाओं से अधिक है। लेकिन महिलाओं में तेजी से बढ़ती भागीदारी यह संकेत देती है कि आने वाले समय में यह अंतर और कम हो सकता है। रिपोर्ट यह भी बताती है कि निवेश के बारे में खुद सीखने वाली महिलाओं की संख्या भी बढ़ रही है। अब करीब 16 फीसदी महिला निवेशकों ने कहा कि उन्होंने निवेश की जानकारी स्वयं हासिल की है, जबकि 2022 में यह आंकड़ा 13 फीसदी था। इसके विपरीत संयुक्त रूप से निवेश निर्णय लेने वाली महिलाओं का हिस्सा 52 फीसदी से घटकर 43 फीसदी रह गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि महिलाएं अब आर्थिक मामलों में ज्यादा आत्मनिर्भर हो रही हैं।

मार्केट-लिंक्ड प्रोडक्ट्स में बढ़ी दिलचस्पी

महिलाएं अब पारंपरिक निवेश विकल्पों के साथ-साथ बाजार से जुड़े निवेश उत्पादों में भी सक्रिय हो रही हैं। सर्वे के मुताबिक करीब 51 फीसदी महिलाएं अब म्यूचुअल फंड और शेयरों में स्वतंत्र रूप से निवेश कर रही हैं, जबकि तीन साल पहले यह आंकड़ा 39 फीसदी था। यह बदलाव इस बात का संकेत है कि महिलाओं में जोखिम लेने की क्षमता और निवेश की समझ दोनों बढ़ रही हैं।

आत्मविश्वास ऊंचा, लेकिन फाइनेंशियल प्लानिंग कमजोर

रिपोर्ट का एक अहम निष्कर्ष यह भी है कि निवेशकों में आत्मविश्वास तो बढ़ा है, लेकिन व्यवस्थित वित्तीय योजना के मामले में अभी भी बड़ा अंतर बना हुआ है। सर्वे के मुताबिक 84 फीसदी लोगों को भरोसा है कि वे निवेश के फैसले खुद लेने में सक्षम हैं। लेकिन सिर्फ 33 फीसदी निवेशकों के पास ही स्पष्ट वित्तीय लक्ष्य और उन्हें हासिल करने की ठोस योजना मौजूद है।

यह भी जानें

- 32 फीसदी लोगों के पास योजना तो है, लेकिन कोई स्पष्ट लक्ष्य नहीं है।
- 29 फीसदी लोगों ने लक्ष्य तय किए हैं, लेकिन उन्हें हासिल करने की ठोस रणनीति नहीं है।
- 6 फीसदी के पास न लक्ष्य है और न ही कोई योजना।
- 25 से 34 वर्ष की युवा महिलाओं में ज्यादा दिखाई देता है। इस आयु वर्ग की कई महिलाएं निवेश की योजना तो बनाती हैं, लेकिन उनके लक्ष्य स्पष्ट नहीं होते।

पैसे के मायने भी बदल रहे

अध्ययन दिखाता है कि शहरी भारत में पैसे को लेकर लोगों की सोच तेजी से बदल रही है। पहले जहां पैसे को मुख्य रूप से जरूरत या जीविका से जोड़ा जाता था, वहीं इसे आजादी और बेहतर जीवनशैली से जोड़ा जाने लगा है। 2022 में जहां 27 फीसदी लोग पैसे को 'आजादी' से जोड़ते थे, वहीं अब यह आंकड़ा बढ़कर 35 फीसदी हो गया है। इसके विपरीत पैसे को केवल 'जरूरत' से जोड़ने वालों की संख्या घट गई है।

घर से ज्यादा अनुभवों पर खर्च

निवेश व्यवहार में एक दिलचस्प बदलाव यह भी देखने को मिला है कि लोग पारंपरिक संपत्तियों के बजाय अनुभवों को अधिक महत्व देने लगे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक 41 फीसदी महिलाएं घर खरीदने की बजाय यात्रा को प्राथमिकता दे रही हैं, जबकि पुरुषों में यह आंकड़ा 34 फीसदी है। 2025 में करीब 43 फीसदी लोगों ने अतिरिक्त पैसे का इस्तेमाल यात्रा पर किया, जबकि 2022 में यह हिस्सा 36 फीसदी था। वहीं, घर खरीदने को सबसे बड़ा सपना मानने वालों का प्रतिशत 36 फीसदी से घटकर 28 फीसदी रह गया है।

सलाहकारों पर भरोसा लेकिन उपयोग सीमित

- 39 फीसदी लोग वित्तीय जानकारी किसी अनजान व्यक्ति से साझा करने में असहज महसूस करते हैं।
- 35 फीसदी का मानना है कि उन्हें अन्य स्रोतों से ही पर्याप्त जानकारी मिल जाती है।
- 32 फीसदी किसी की सलाह मानने में सहज नहीं होते।
- निवेश के मामलों में परिवार और दोस्तों की भूमिका सबसे अहम बनी हुई है। 76 फीसदी निवेश संबंधी सलाह अपने सामाजिक दायरे से लेते हैं।
- निवेश से जुड़े फैसलों में सोशल मीडिया की भूमिका भी तेजी से बढ़ रही है।
- शेयर बाजार में निवेश करने वाली महिलाओं में 51 फीसदी सोशल मीडिया पर स्टॉक से जुड़े कंटेंट पर सक्रिय रूप से पोस्ट या टिप्पणी करती हैं, जबकि पुरुषों में यह आंकड़ा 36 फीसदी है।

पैसे को सही दिशा देना बेहद जरूरी

बिजनेस डेस्क। आज की अनिश्चित आर्थिक परिस्थितियों में केवल निवेश करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि मजबूत इमरजेंसी फंड बनाना भी उतना ही जरूरी है। नौकरी की अस्थिरता, अचानक मेडिकल खर्च, बिजनेस में मंदी या किसी पारिवारिक संकट जैसी स्थितियां बिना चेतावनी के सामने आ सकती हैं। ऐसे समय में इमरजेंसी फंड आपके वित्तीय जीवन का सेफ्टी नेट बनता है। लेकिन सबसे बड़ा सवाल यही है आखिर कितना इमरजेंसी फंड होना चाहिए? इसका जवाब हर व्यक्ति के लिए अलग हो सकता है, क्योंकि यह आपकी आय, खर्च, पारिवारिक जिम्मेदारियों और नौकरी की स्थिरता पर निर्भर करता है।

क्या है इमरजेंसी फंड? : इमरजेंसी फंड वह राशि है जिसे आप केवल आपात स्थिति के लिए अलग रखते हैं। यह पैसा निवेश के लिए नहीं, बल्कि संकट के समय खर्च चलाने के लिए होता है। इसका उद्देश्य है कि किसी भी आकस्मिक स्थिति में आपको कर्ज न लेना पड़े या निवेश तोड़ना न पड़े।

तीन महीने का इमरजेंसी फंड : किनके लिए सही?

- अगर आप: सैलरीड कर्मचारी हैं, अविवाहित हैं, ईएमआई या बड़ी वित्तीय जिम्मेदारियां नहीं हैं। आपकी नौकरी स्थिर और सुरक्षित है। तो आपके लिए 3 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड पर्याप्त हो सकता है। उदाहरण के तौर पर, यदि आपका मासिक खर्च 40,000 है, तो कम से कम 1.2 लाख रुपये का इमरजेंसी फंड होना चाहिए। इसमें किराया, राशन, बिजली-पानी, मोबाइल बिल, ट्रांसपोर्ट और बीमा प्रीमियम जैसे आवश्यक खर्च शामिल करें।

6 महीने का इमरजेंसी फंड : परिवार वालों के लिए जरूरी

- यदि आप शादीशुदा हैं या आपके ऊपर परिवार की जिम्मेदारी है, तो जोखिम बढ़ जाता है। ऐसे में कम से कम 6 महीने के खर्च के बराबर फंड रखना समझदारी है। आपका मासिक खर्च 70,000 है, तो लगभग 4.2 लाख का इमरजेंसी फंड होना चाहिए। इसमें शामिल करें: घर का किराया या ईएमआई, स्कूल फीस, राशन और घरेलू खर्च, बीमा प्रीमियम, मेडिकल खर्च, परिवार के साथ रहने पर अचानक खर्च बढ़ सकते हैं, इसलिए ज्यादा सुरक्षा जरूरी है।

9 से 12 महीने का इमरजेंसी फंड : अस्थिर आय वालों के लिए

अगर आप : फ्रीलांसर हैं, बिजनेस मालिक हैं, कमीशन आधारित आय पर निर्भर हैं, परिवार के अकेले कमाने वाले सदस्य हैं तो आपको 9 से 12 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड रखना चाहिए। अनियमित आय वाले लोगों पर आर्थिक मंदी या बाजार में गिरावट का असर ज्यादा होता है। उदाहरण के लिए, यदि आपका मासिक खर्च 60,000 है, तो 5.4 लाख रुपये से 7.2 लाख तक का फंड सुरक्षित माना जाएगा। लंबी अवधि तक वित्तीय स्थिरता देगा।

कितना कम या ज्यादा है सही? : बहुत कम इमरजेंसी फंड जोखिम भरा है, क्योंकि अचानक नौकरी जाने या बीमारी की स्थिति में आपको कर्ज लेना पड़ सकता है। वहीं, जरूरत से ज्यादा पैसा केवल सेविंग अकाउंट में रखने से आपकी निवेश ग्रोथ धीमी हो सकती है, क्योंकि उस पर कम रिटर्न मिलता है। इसलिए संतुलन जरूरी है न बहुत कम, न बहुत ज्यादा।

इमरजेंसी फंड कहां रखें?

1. सेविंग अकाउंट

सबसे आसान और लिक्विड विकल्प। पैसा तुरंत निकाला जा सकता है। हालांकि ब्याज दर कम होती है।

2. शॉर्ट-टर्म फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी)

कम अवधि की एफडी में पैसा रखने से सेविंग अकाउंट से थोड़ा ज्यादा ब्याज मिलता है और जोखिम भी कम रहता है।

3. स्वीप-इन एफडी

एक बेहतर विकल्प है, जहां आपका पैसा सेविंग अकाउंट में रहता है और जरूरत से ज्यादा राशि स्वतः एफडी में चली जाती है। जरूरत पर ऑटोमैटिक ब्रेक होकर पैसा उपलब्ध हो जाता है।

इमरजेंसी फंड कैसे बनाएं?

- हर महीने सैलरी का 10–20% अलग रखें।
- बोनस या अतिरिक्त आय का हिस्सा जोड़ें।
- खर्चों की समीक्षा कर गैर-जरूरी खर्च कम करें।
- लक्ष्य तय करें और ऑटोमैटिक ट्रांसफर सेट करें।

अगर आदत जल्दी बनती है तो जोखिम भी रहता है सीमित

सिर्फ 1000 रुपये की एसआईपी से करोड़पति बन सकती है जेन जेड, रिटायरमेंट तक तैयार हो सकता है बड़ा फंड

समय जितना ज्यादा कंपाउंडिंग का असर उतना बड़ा होगा

निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

आज की युवा पीढ़ी यानी जेन जेड कमाई के साथ-साथ निवेश को लेकर भी पहले से ज्यादा जागरूक हो रही है। 1997 से 2012 के बीच जन्मी यह पीढ़ी टेक्नोलॉजी-फ्रेंडली है और डिजिटल प्लेटफॉर्म के जरिए निवेश करना पसंद करती है, लेकिन बड़ा सवाल यह है क्या सच में सिर्फ 1000 रुपये की एसआईपी से करोड़पति बना जा सकता है? जवाब है हां, अगर शुरुआत जल्दी हो और निवेश लंबी अवधि तक जारी रहे।

क्या है एसआईपी और क्यों खास?

एसआईपी यानी सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान। यह तरीका आपको हर महीने एक तय राशि निवेश करने की सुविधा देता है। एसआईपी के जरिए निवेश मुख्य रूप से म्यूचुअल फंड में किया जाता है, जिसका प्रदर्शन शेयर बाजार पर निर्भर करता है। एसआईपी की सबसे बड़ी ताकत है कंपाउंडिंग-यानी आपके निवेश पर मिलने वाला रिटर्न भी आगे रिटर्न कमाता है। यही चक्र समय के साथ बड़े फंड में बदल जाता है। मान लीजिए आपकी उम्र 20 साल है और आप हर महीने 1000 रुपये की एसआईपी शुरू करते हैं। आप यह निवेश 60 साल की उम्र तक यानी 40 साल तक जारी रखते हैं। यदि सालाना 12% अनुमानित रिटर्न मिले।

इसे ऐसे समझें

- कुल निवेश: 1000×12 महीने × 40 साल = 4.8 लाख रुपये
- अनुमानित फंड : लगभग 97.93 लाख रुपये यानी सिर्फ 4.8 लाख रुपये निवेश करके आप करीब 98 लाख रुपये का फंड बना सकते हैं।
- यदि सालाना 15% अनुमानित रिटर्न मिले
- कुल निवेश : 4.8 लाख रुपये
- अनुमानित फंड : लगभग 2.30 करोड़ रुपये
- यहां साफ दिखता है कि रिटर्न में सिर्फ 3% का अंतर भी लंबे समय में कितना बड़ा बदलाव ला सकता है। यही है कंपाउंडिंग की असली ताकत।

जल्दी शुरुआत क्यों है जरूरी?

अगर आप 20 की उम्र में शुरुआत करते हैं तो आपके पास 40 साल का समय है। लेकिन यदि यही निवेश 30 की उम्र से शुरू करते हैं, तो आपके पास केवल 30 साल बचेंगे और फंड का आकार काफी छोटा हो जाएगा। समय जितना ज्यादा, कंपाउंडिंग का असर उतना बड़ा।

बाजार जोखिम समझना जरूरी

- एसआईपी पूरी तरह शेयर बाजार से जुड़ी होती है। ऐसे में जरूरी बातें समझना जरूरी है।
- रिटर्न कभी भी फिक्स नहीं होता।
- बाजार में तेजी होगी तो ज्यादा रिटर्न मिलेगा।
- गिरावट के समय पोर्टफोलियो में अस्थायी नुकसान हो सकता है।
- लंबी अवधि में जोखिम कम हो जाता है।
- इतिहास बताता है कि लंबी अवधि में इक्विटी बाजार ने बेहतर रिटर्न दिया है, लेकिन धैर्य बनाए रखना जरूरी है।

टॉप 5 फंड्स का 5 साल का एनुअल रिटर्न 19 से 20% तक रहा

टैक्स का भी रखें ध्यान

एसआईपी से मिलने वाला मुनाफा पूरी तरह टैक्स-फ्री नहीं होता। इक्विटी फंड में एक साल से ज्यादा निवेश रखने पर लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन्स टैक्स लागू होता है (निर्धारित सीमा से ऊपर के लाभ पर)। इसलिए रिटायरमेंट प्लानिंग करते समय टैक्स की गणना भी शामिल करें।

खास सलाह

- लंबा निवेश समय
- डिजिटल प्लेटफॉर्म तक आसान पहुंच
- रिस्क लेने की क्षमता
- अगर आप अभी से 1000 रुपये की एसआईपी शुरू करते हैं और हर साल अपनी आय बढ़ने पर एसआईपी की रकम भी बढ़ाते हैं (स्टेप अप एसआईपी), तो फंड का आकार कई गुना हो सकता है।

निवेश शुरू करने से पहले रखें इन बातों का ध्यान

- इमरजेंसी फंड जरूर बनाएं
- हेल्थ और टर्म इंश्योरेंस लें।
- अपनी जोखिम क्षमता के अनुसार फंड चुनें।
- निवेश लंबी अवधि के लिए रखें, बीच में बंद न करें।
- बाजार गिरने पर घबराकर एसआईपी बंद न करें।

क्या 1000 रुपये काफी

शुरुआत के लिए 1000 रुपये बिल्कुल पर्याप्त है। असली बात रकम नहीं, अनुशासन और निरंतरता है। समय के साथ आप एसआईपी बढ़ा सकते हैं। छोटी रकम से शुरुआत करने का फायदा यह है कि आदत जल्दी बनती है और जोखिम सीमित रहता है। जेन जेड के लिए यह सुनहरा मौका है। 20 की उम्र में शुरू की गई 1000 रुपये की एसआईपी 60 की उम्र तक करोड़ों का फंड बना सकती है। बशर्ते निवेश लंबी अवधि तक जारी रहे और अनुशासन बना रहे। याद रखिए, अमीर बनने के लिए बड़ी सैलरी नहीं, बल्कि जल्दी शुरुआत, धैर्य और कंपाउंडिंग की समझ जरूरी है। अगर आज कदम उठाएंगे, तो रिटायरमेंट के समय आपके पास भारी-भरकम फंड हो सकता है। अब सवाल यह है कि आप अपनी पहली एसआईपी कब शुरू कर रहे हैं?

सैलरी और जरूरतों को समझें कितना इमरजेंसी फंड है जरूरी

तैयारी

बिजनेस डेस्क

आज की अनिश्चित आर्थिक परिस्थितियों में केवल निवेश करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि एक मजबूत इमरजेंसी फंड बनाना भी उतना ही जरूरी है। नौकरी की अस्थिरता, अचानक मेडिकल खर्च, बिजनेस में मंदी या किसी पारिवारिक संकट जैसी स्थितियां बिना चेतावनी के सामने आ सकती हैं। ऐसे समय में इमरजेंसी फंड आपके वित्तीय जीवन का सेफ्टी नेट बनता है। लेकिन सबसे बड़ा सवाल यही है आखिर कितना इमरजेंसी फंड होना चाहिए? इसका जवाब हर व्यक्ति के लिए अलग हो सकता है, क्योंकि यह आपकी आय, खर्च, पारिवारिक जिम्मेदारियों और नौकरी की स्थिरता पर निर्भर करता है।

क्या है इमरजेंसी फंड?

इमरजेंसी फंड वह राशि है जिसे आप केवल आपात स्थिति के लिए अलग रखते हैं। यह पैसा निवेश के लिए नहीं, बल्कि संकट के समय खर्च चलाने के लिए होता है। इसका उद्देश्य है कि किसी भी आकस्मिक स्थिति में आपको कर्ज न लेना पड़े या निवेश तोड़ना न पड़े।

तीन महीने का इमरजेंसी फंड : किनके लिए सही?

- अगर आप: सैलरीड कर्मचारी हैं, अविवाहित हैं, ईएमआई या बड़ी वित्तीय जिम्मेदारियां नहीं हैं। आपकी नौकरी स्थिर और सुरक्षित है। तो आपके लिए 3 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड पर्याप्त हो सकता है। उदाहरण के तौर पर, यदि आपका मासिक खर्च 40,000 है, तो कम से कम 1.2 लाख रुपये का इमरजेंसी फंड होना चाहिए। इसमें किराया, राशन, बिजली-पानी, मोबाइल बिल, ट्रांसपोर्ट और बीमा प्रीमियम जैसे आवश्यक खर्च शामिल करें।

6 महीने का इमरजेंसी फंड परिवार वालों के लिए जरूरी

- यदि आप शादीशुदा हैं या आपके ऊपर परिवार की जिम्मेदारी है, तो जोखिम बढ़ जाता है। ऐसे में कम से कम 6 महीने के खर्च के बराबर फंड रखना समझदारी है। मान लीजिए आपका मासिक खर्च 70,000 है, तो लगभग 4.2 लाख का इमरजेंसी फंड होना चाहिए। इसमें शामिल करें: घर का किराया या ईएमआई, बच्चों की स्कूल फीस, राशन और घरेलू खर्च, बीमा प्रीमियम, मेडिकल खर्च, परिवार के साथ रहने पर अचानक खर्च बढ़ सकते हैं, इसलिए ज्यादा सुरक्षा जरूरी है।

9 से 12 महीने का इमरजेंसी फंड अस्थिर आय वालों के लिए

- अगर आप : फ्रीलांसर हैं, बिजनेस मालिक हैं, कमीशन आधारित आय पर निर्भर हैं, परिवार के अकेले कमाने वाले सदस्य हैं
- तो आपको 9 से 12 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड रखना चाहिए। अनियमित आय वाले लोगों पर आर्थिक मंदी या बाजार में गिरावट का असर ज्यादा होता है। उदाहरण के लिए, यदि आपका मासिक खर्च 60,000 है, तो 5.4 लाख रुपये से 7.2 लाख तक का फंड सुरक्षित माना जाएगा। यह आपको लंबी अवधि तक वित्तीय स्थिरता देगा।

कितना कम या ज्यादा है सही?

- बहुत कम इमरजेंसी फंड जोखिम भरा है, क्योंकि अचानक नौकरी जाने या बीमारी की स्थिति में आपको कर्ज लेना पड़ सकता है। वहीं, जरूरत से ज्यादा पैसा केवल सेविंग अकाउंट में रखने से आपकी निवेश ग्रोथ धीमी हो सकती है, क्योंकि उस पर कम रिटर्न मिलता है। इसलिए संतुलन जरूरी है न बहुत कम, न बहुत ज्यादा।

इमरजेंसी फंड कहां रखें?

1. सेविंग अकाउंट
   सबसे आसान और लिक्विड विकल्प। पैसा तुरंत निकाला जा सकता है। हालांकि ब्याज दर कम होती है।
2. शॉर्ट-टर्म फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी)
   कम अवधि की एफडी में पैसा रखने से सेविंग अकाउंट से थोड़ा ज्यादा ब्याज मिलता है और जोखिम भी कम रहता है।
3. स्वीप-इन एफडी
   यह एक बेहतर विकल्प है, जहां आपका पैसा सेविंग अकाउंट में रहता है और जरूरत से ज्यादा राशि स्वतः एफडी में चली जाती है। जरूरत पड़ने पर ऑटोमैटिक ब्रेक होकर पैसा उपलब्ध हो जाता है। ध्यान रखें, इमरजेंसी फंड को शेयर बाजार, म्यूचुअल फंड या लंबी अवधि के निवेश साधनों में न रखें, क्योंकि बाजार गिरावट के समय आपको नुकसान में पैसा निकालना पड़ सकता है।

इमरजेंसी फंड कैसे बनाएं?

- हर महीने सैलरी का 10–20% अलग रखें
- बोनस या अतिरिक्त आय का हिस्सा जोड़ें
- खर्चों की समीक्षा कर गैर-जरूरी खर्च कम करें

लक्ष्य तय करें व ऑटोमैटिक ट्रांसफर सेट करें

- धीरे-धीरे 6–12 महीनों में आपका फंड तैयार हो सकता है।

जीवन की पहली सुरक्षा परत

- इमरजेंसी फंड आपके वित्तीय जीवन की पहली सुरक्षा परत है। निवेश से पहले इसे प्राथमिकता देना चाहिए। आपकी सैलरी, नौकरी की स्थिरता और पारिवारिक जिम्मेदारियां तय करती हैं कि आपको 3, 6 या 12 महीने का फंड रखना चाहिए।
- सही योजना के साथ बनाया गया इमरजेंसी फंड आपको मानसिक शांति देता है और किसी भी आर्थिक संकट में मजबूती से खड़ा रखता है। याद रखें सुरक्षा पहले, निवेश बाद में।

घुसकानी स्कूल की अनूठी पहल

पाठ पढ़ो, याद करो, सुनाओ और इनाम पाओ : विनोद पिंकू

बच्चों को पढ़ाई, खेल और रचनात्मक गतिविधियों में आगे बढ़ाकर ऑलराउंडर बनाने का प्रयास

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी। विषय की बेहतरीन तैयारी करने वाले बच्चों को प्रोत्साहन के रूप में सम्मानित करते शारीरिक शिक्षक। फोटो : हरिभूमि

वीर शहीद कैप्टन ओपी दलाल राजकीय उच्च विद्यालय घुसकानी में बदलाव की पाठशाला का अनूठा अभियान पाठ पढ़ो, लिखो, याद करो, सुनाओ और इनाम पाओ" से विद्यार्थियों में बढ़ी पढ़ाई के प्रति रुचि बच्चों को पढ़ाई, खेल और रचनात्मक गतिविधियों में आगे बढ़ाकर ऑलराउंडर बनाने के उद्देश्य से बदलाव की पाठशाला द्वारा निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में शारीरिक शिक्षक विनोद पिंकू के नेतृत्व में "पाठ पढ़ो, लिखो, याद करो, सुनाओ और ईनाम पाओ" अभियान चलाया जा रहा है, जिससे विद्यालय के विद्यार्थियों में पढ़ाई के प्रति विशेष रुचि देखने को मिल रही है। इस अभियान के अंतर्गत विद्यार्थियों को प्रतिदिन पाठ पढ़ने, महत्वपूर्ण बिंदुओं को लिखने, उन्हें याद करने और कक्षा के सामने सुनाने के लिए प्रेरित किया जाता है। जो विद्यार्थी बेहतर प्रदर्शन करते हैं उन्हें प्रोत्साहन स्वरूप छोटे-छोटे पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाता है। इससे बच्चों में आत्मविश्वास के साथ-साथ प्रतिस्पर्धा की स्वस्थ भावना भी विकसित हो रही है। शारीरिक शिक्षक विनोद पिंकू ने बताया कि बदलाव की पाठशाला का उद्देश्य केवल पढ़ाई तक सीमित नहीं है, बल्कि बच्चों का सर्वांगीण विकास करना है, ताकि वे शिक्षा, खेल और संस्कारों में आगे बढ़कर एक आदर्श नागरिक बन सकें। इसी लक्ष्य को लेकर समय-समय पर विभिन्न शैक्षणिक, खेल एवं रचनात्मक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। इस अभियान के सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं और विद्यार्थियों में पढ़ाई के प्रति उत्साह लगातार बढ़ रहा है। विद्यालय के शिक्षक एवं अभिभावक भी इस पहल की सराहना कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि अभी यह अनूठी पहल गांव घुसकानी के स्कूल से शुरू की है। इसके बाद अन्य पड़ौसी स्कूलों तक ले जाया जाएगा। चूंकि इस पहल के तहत स्कूलों में बच्चों की संख्या बढाई जाएगी। साथ में बच्चों का शिक्षा के प्रति रूझान बनाया जाएगा। इनाम मिलने के बाद बच्चा शिक्षा ग्रहण के प्रति सकारात्मक रहेगा।

कांग्रेस ने की डीएससी समाज की अनदेखी: संदीप

भिवानी। धानक जनकल्याण मंच हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष संदीप खरकिया ने हरियाणा में अनुसूचित जाति में दो वर्ग हैं ओएससी और डीएससी कांग्रेस पार्टी ने राज्यसभा सीट को लेकर ओएससी समाज से आने वाले चेहरे कर्मवीर बौद्ध पर दांव खेला है। जो डीएससी समाज के साथ लगातार धोखा किया है वोट बैंक के आधार पर दोनों वर्ग बराबर हैं लेकिन डीएससी जातियों का राजनीतिक प्रतिनिधित्व न के बराबर है जिसमें डिएंटी की भी सभी जातियां शामिल हैं। यानि राजनीतिक प्रतिनिधित्व के मामले में डीएससी समाज बहुत पीछे हैं। मंच ने इस मामले में लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी को पत्र लिखकर अपने नाराजगी व्यक्त की उन्होंने आज जारी बयान में कहा कि हरियाणा में मौजूदा कांग्रेस की बात करें तो डीएससी समाज का एक भी व्यक्ति आज तक लोकसभा या राज्यसभा नहीं जा पाया है लेकिन यह समाज हमेशा से कांग्रेस पार्टी की मजबूती का आधार रहा है।हरियाणा में कांग्रेस ने अब तक जितने भी प्रदेशाध्यक्ष बनाए हैं सभी ओएससी समाज से रहे हैं, इनमें फूलचंद मौलाना से लेकर कुमारी शैलजा, अशोक तंवर और उदय भान हरियाणा कांग्रेस के अध्यक्ष शामिल रहे।

विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से मोहा मन

भिवानी। वार्षिकोत्सव में सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देते विद्यार्थी।

■ बच्चों का अधिक से अधिक नामांकन सरकारी विद्यालयों करवाएं अभिभावक : डिप्टी डीईओ

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भानगढ़ स्थित पीएमश्री राजकीय वमा विद्यालय में द्वितीय वार्षिक उत्सव बड़े ही धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम के मुख्यतिथि उपजिला शिक्षा अधिकारी डॉ. सुरेन्द्र सिंह रहे। उन्होंने द्वीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। डॉ. सुरेंद्र ने ग्रामीणों से अपील की कि अपने बच्चों का सरकारी विद्यालयों में अधिक से अधिक नामांकन करवाएं। उन्होंने सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में चलाई जा रही विभिन्न जन-कल्याणकारी योजनाओं और नीतियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि योजनाओं का अभिभावक और छात्र लाभ उठाएं। विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने एक से बढ़कर एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। बच्चों की ऊर्जा और कलात्मक प्रदर्शन ने वहां मौजूद सभी दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया।

प्राचार्य दिलबाग सिंह बाजिया ने कहा कि ऐसे आयोजनों से बच्चों को अपनी छिपी हुई प्रतिभा दिखाने का मंच मिलता है। कार्यक्रम का मंच संचालन मोनिका ने किया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से सरपंच कुलदीप, बीडीसी सुरजीत, चेयरमैन बीरसिंह, एसएमसी प्रधान सुनील दत्त, हरदवारी लाल व सुनील एलए आदि मौजूद रहे।

घरेलू गैस सिलेंडर के महंगा होने पर कांग्रेस ने सरकार पर बोला हमला

■ सिलेंडर के दाम बढ़ाकर भाजपा सरकार ने आमजन की जेब पर फिर डाला डाका : गुलिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

भिवानी। कांग्रेस के शहरी जिलाध्यक्ष प्रदीप गुलिया जोगी।

केंद्र सरकार द्वारा घरेलू रसोई गैस के दामों में 60 रुपये प्रति सिलेंडर की भारी बढ़ोतरी किए जाने के बाद देशभर में आक्रोश का माहौल है। इस फैसले ने आम आदमी की रसोई के बजट को बिगाड़ दिया है।

आमजन पर महंगाई की इतनी बड़ी मार मारे जाने पर कांग्रेस ने सरकार की घेराबंदी शुरू कर दी है, इसी कड़ी में कांग्रेस के शहरी जिला अध्यक्ष प्रदीप गुलिया जोगी ने मूल्य वृद्धि की कड़े शब्दों में निंदा की है।

गुलिया ने भाजपा सरकार को जनविरोधी करार देते हुए कहा कि यह बढ़ोतरी मध्यम और गरीब वर्ग की कमर तोड़ने वाली है। गुलिया ने कहा कि भाजपा सरकार अच्छे दिन का वादा करके सत्ता में आई थी, लेकिन आज वह जनता के आंसू निकालने का काम कर रही है। गैस सिलेंडर के दाम 60 रुपये बढ़ाना कोई सामान्य बात नहीं है, ये सीधे तौर पर आमजन की थाली से निवाला छीनने जैसा है। जोगी ने कहा कि मोदी सरकार केवल पूंजीपतियों की तिजोरी भरने में व्यस्त है, जबकि आम गृहिणी आज परेशान है।

उन्होंने कहा कि दाल, तेल और सब्जियों की बढ़ती कीमतों के बीच गैस के दाम बढ़ाना जले पर नमक छिड़कने जैसा है। गुलिया ने स्पष्ट किया कि कांग्रेस उक्त मुद्दे को लेकर शांत नहीं बैठेगी। आने वाले दिनों में जिला मुख्यालयों पर बड़ा विरोध प्रदर्शन किया जाएगा। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने चेतावनी दी कि बढ़ोतरी वापस नहीं ली तो वे सड़कों पर उतरकर प्रदर्शन करेंगे और जनता को जागरूक करेंगे।

आज भी महिलाओं की स्थिति दयनीय: कविता

■ बीके शिक्षण महाविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर वाद विवाद स्पर्धा करववाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बवानीखेड़ा

बवानीखेड़ा। आयोजित कार्यक्रम में छात्राओं को संबोधित करते एक वक्ता।

बीके शिक्षण महाविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में भावी अध्यापक अध्यापिकाओं ने बढ़ चढ़कर के भाग लिया।

प्रतियोगिता में महिलाओं का सशक्तिकरणः वास्तविकता या छलावा पर छात्र-छात्राओं ने अपने विचार रखें जिसमें प्रथम वर्ष के छात्र अमित शर्मा तथा छात्रा राधिका गर्ग ने इस विषय के पक्ष में अपने विचार रखते हुए कहा कि आज भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति काफी हद तक सशक्त हुई है, आज महिलाएं हर क्षेत्र में अपना वर्चस्व कायम करती हुई नजर आ रही हैं, चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, चाहे देश की सुरक्षा का क्षेत्र, कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जो महिलाओ के कार्य क्षेत्र से बाहर नजर आता है। जबकि इसी विषय पर विपक्ष में बोलते हुए छात्र ललिता, स्पर्शी गर्ग और कविता शर्मा ने कहा कि आज भी भारतीय समाज में महिलाओं को वह सम्मानजनक स्थिति उपलब्ध नहीं है जो उन्हें उपलब्ध होनी चाहिए।आज भी महिलाओं के लिए घड़ियाली आंसू तो बहुत बहाए जाते हैं लेकिन वास्तविकता के धरातल पर आज भी महिलाओं की स्थिति बड़ी दयनीय है। आज भी भारतीय समाज पितृ सत्तात्मकता सोच को धारण किए हुए हैं जिसके कारण आज भी एक महिला नो महीने तक जब तक गर्भधारण रखती हैं तब तक वह एक पुत्र की माता कहलाती है, आज भी बेटी पैदा होने पर खुशियां नहीं मनाई जाती। चाहे बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ के नारे कितने ही लगाए जाएं लेकिन वास्तविकता में यह चरितार्थ नहीं होते। इस अवसर पर सहायक प्रवक्ता डॉक्टर अंकित गोयल, डॉक्टर साक्षी, डॉक्टर शर्मिला, निशा, नेहा, जगबीर, हर्ष तथा नॉन टीचिंग स्टाफ में प्रमोद कुमार, प्रदीप कुमार, मनीष शंकर जी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

अभी भी बहुत ज्यादा सुधार की जरूरत

इस अवसर पर प्राचार्य रविन्द्र राठी ने कहा कि वाद विवाद जैसी प्रतियोगिताएं समाज में एक नए विचार को पैदा करने की कोशिश करती हैं। आज इस ज्वलंत मुद्दे पर जो विचार निकाल करके सामने आया वह यह है कि महिलाओं की स्थिति में सुधार तो बहुत हुआ है, लेकिन अभी भी बहुत ज्यादा सुधार की जरूरत है ताकि वह समाज में एक सम्मानजनक स्थिति को पा सके।

भिवानी। हिंदू सम्मेलन में मौजूद लोग। फोटो : हरिभूमि

हिंदू सम्मेलन में एकजुट रहने का संदेश दिया

भिवानी। गांव जमालपुर में दादी गौरी हिन्दू सम्मेलन आयोजन समिति के तत्वावधान में हिन्दू सम्मेलन का आयोजन किया। पंचायत घर में कार्यक्रम में भारी संख्या में क्षेत्र के प्रबुद्ध नागरिकों और धर्मप्रेमियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम की शुरुआत हवन यज्ञ के साथ हुई, जिसमें आहुतियां डालकर क्षेत्र की खुशहाली और विश्व शांति की कामना की। कार्यक्रम स्थल पर लगाई 'श्रीसनातन प्रदर्शनी' मुख्य आकर्षण का केंद्र रही, जिसमें गौरवशाली भारतीय इतिहास एवं धार्मिक मूल्यों को दर्शाया। सम्मेलन में पहुंचे आध्यात्मिक गुरुओं ने समाज को एकजुट रहने का संदेश दिया। ब्रह्माकुमारी सुनीता ने मन की शांति और चारित्रिक उत्थान पर बल दिया। महामंडलेश्वर स्वामी महेशानंद सरस्वती ने श्रीसनातन धर्म की रक्षा के लिए शिक्षित और जागरूक होने का आह्वान किया। महंत भागवत गिरि ने सामाजिक समरसता को राष्ट्र की मजबूती का आधार बताया। महंत बंसीगिरि महाराज ने संतों के आशीर्वाद ने उपस्थित जनसमूह में नई ऊर्जा का संचार किया।

मेडिटेशन से मिलती है मानसिक शांति

■ महिला केवल परिवार की धुरी नहीं, बल्कि संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संरक्षक होती : ज्योति

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी। कार्यक्रम को संबोधित करती बीके ज्योति। फोटो : हरिभूमि

महिलाएं भारतीय संस्कृति, संस्कारों और आध्यात्मिक मूल्यों के बल से ही अपने गृहस्थ जीवन को दिव्य,श्रेष्ठ व महान बना सकती हैं, ये उद्गार प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय झोझूकलां शाखा के तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में संस्कृति की संरक्षक महिला विषय पर बधवाना स्थित शनि मंदिर में आयोजित कार्यक्रम में महिलाओं को संबोधित करते हुए झोझूकलां सेवाकेंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी ज्योति बहन ने व्यक्त किए। ब्रह्माकुमारी बहन ने कहा कि महिला केवल परिवार की धुरी ही नहीं, बल्कि संस्कृति और संस्कारों की सच्ची संरक्षक होती है, यदि महिलाएं आध्यात्मिक मूल्यों को अपनाकर परिवार का मार्गदर्शन करें तो समाज में शांति, सद्भाव और नैतिकता का वातावरण स्वतः स्थापित हो सकता है। उन्होंने कहा कि राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से महिलाएं अपने जीवन में आत्मबल, धैर्य और सकारात्मकता विकसित कर सकती हैं। ब्रह्माकुमारी रितु बहन ने गृहस्थ जीवन में मेडिटेशन के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि आज की व्यस्त एवं तनावपूर्ण जीवनशैली में मेडिटेशन मानसिक शांति, पारिवारिक सौहार्द और जीवन में संतुलन बनाए रखने का सरल एवं प्रभावी माध्यम है। उन्होंने सबको नियमित रूप से मेडिटेशन अपनाने के लिए प्रेरित किया।

प्रशिक्षण किसी भी संगठन की रीढ़

भिवानी। भिवानी। भारतीय जनता पार्टी द्वारा सांगठनिक मजबूती और कार्यकर्ताओं के वैचारिक कौशल को निखारने के लिए चलाए जा रहे पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाअभियान 2026 के अंतर्गत शनिवार को जिला भाजपा कार्यालय में ग्रामीण मंडल प्रशिक्षण कार्यशाला संपन्न हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता भाजपा भिवानी ग्रामीण मंडल अध्यक्ष सुनील धारेडू ने की। कार्यक्रम का आयोजन 7 सत्रों में किया गया। ग्रामीण मंडलों से आए कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कि प्रशिक्षण किसी भी संगठन की रीढ़ होता है। यह कार्यशाला केवल एक बैठक नहीं, बल्कि कार्यकर्ताओं के वैचारिक शुद्धिकरण और सशक्तिकरण का माध्यम है। हमें प्रत्येक गांव और बूथ तक सरकार की जनहितैषी नीतियों को पहुंचाना है ताकि अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को उसका लाभ मिल सके। इस दौरान कार्यकर्ताओं को डिजिटल माध्यमों और सोशल मीडिया के प्रभावी उपयोग का प्रशिक्षण दिया गया। गरीब कल्याण योजनाओं को घर-घर पहुंचाने की रणनीति तैयार की गई। 2026 के संगठनात्मक विस्तार और आगामी चुनावों के मद्देनजर ग्रामीण क्षेत्रों में पकड़ मजबूत करने पर जोर।

भिवानी। आयोजित कार्यशाला में लोगों को संबोधित करते हुए।

ओपीडी खिड़की पर नहीं लगाई बंद की सूचनार्थ पट्टिका

अस्पताल में ओपीडी बंद, चक्कर काटते दिखे मरीज

इमरजेंसी सेवाओं के लिए सुचारू रूप से तैनात रहे कर्मचारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बवानीखेड़ा

भिवानी। हड़ताल के चलते बंद पड़ी अस्पताल की ओपीडी सर्विस।

बवानीखेड़ा नागरिक अस्पताल में शनिवार को ओपीडी सर्विस बंद होने से मरीजों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा जिसके चलते मरीज जानकारी के अभाव में चककर काटते हुए दिखाई दिए। मरीजों ने नाराजगी जताते हुए बताया कि स्थानीय प्रशासन को सूचनार्थ पट्टिका लगानी चाहिए ताकि मरीजों को दिक्कतों का सामना ना करना पड़े। उल्लेखनीय है कि करनाल में डॉक्टर के साथ हुई घटना के विरोध में पूरा स्वास्थ्य विभाग एकत्रित दिखाई दिया। जिसके तहत नागरिक अस्पताल के साथ साथ फिल्ड की पीएचसी, सीएचसी में भी ओपीडी सर्विस बंद रही। सभी चिकित्सक चाहें एनएचएम कर्मचारी, नर्सिंग ऑफिसर, फार्मासिस्ट, एमपीएचडब्ल्यू, एलटी और लिपिक स्टाफ हो सभी एकजुट दिखाई दिए। सभी ने मांग करते हुए बताया कि करनाल में पुलिस द्वारा डॉक्टर के साथ गलत व्यवहार किया है उस पुलिस कर्मचारी के खिलाफ संबंधित धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज किया जाए और उसे गिरफ्तार किया जाए। हालांकि बवानीखेड़ा नागरिक अस्पताल में ओपीडी सस्पेंड रही लेकिन इमरजेंसी सेवाओं के लिए स्वास्थ्य कर्मी तैनात रहे ताकि किसी भी क्षण आने वाले मरीजों का प्राथमिक उपचार किया जा सके। दूसरी तरफ इस बारे में एमओ डॉ. विजय कुमार ने बताया कि पूरे हरियाणा में ओपीडी बंद है। पुलिसकर्मी पर कार्यवाही न होने को लेकर ऐसा कदम उठाने को मजबूर दिखाई दिए है। ओपीडी पर कोई सुझाव पट्टिका दिखाई नहीं देने पर बताया कि ये चूक हुई है।

टीपीएफ एक वट वृक्ष का रूप लेकर अनेक समाज उपयोगी कार्यक्रम चला रहा: हिम्मत

■ प्रोफेशन के साथ समाज की सेवा भी करें : हिम्मत जैन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

भिवानी। कार्यक्रम को संबोधित करते हिम्मत जैन। फोटो : हरिभूमि

तेरापंथ समाज की प्रतिष्ठित संस्था तेरापंथ प्रोफेशनल फॉर्म के राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत जैन शनिवार को अपनी पूरी टीम के साथ भिवानी पधारे। उन्होंने टीपीएफ की मीटिंग को संबोधित करते हुए कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण के इंगित अनुसार सभी प्रोफेशनल को अपने प्रोफेशन का कुछ हिस्सा समाजसेवा को समर्पित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि टीपीएफ वट वृक्ष का रूप ले चुका है और अनेक समाज उपयोगी कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं।

उन्होंने संस्था द्वारा चलाए जा रहे मेधावी छात्र सम्मान योजना, रक्तदान शिविर, आई कैंप ,करियर काउंसलिंग सेमिनार आदि प्रोजेक्टों की विस्तार से जानकारी दी और स्थानीय शाखा को इन सब पर और अधिक तेजी से काम करने की अपील की। शाखा के अध्यक्ष अशोक जैन ने संगठन यात्रा के क्रम में आए सभी का स्वागत और अभिनंदन किया। उन्होंने कहा कि साल 2006 के आचार्यश्री महाप्रज्ञ के भिवानी चातुर्मास में प्रेक्षा विहार में टीपीएफ की नींव रखी थी। उन्होंने विश्वास जताया कि भविष्य में उनकी शाखा और अधिक तेजी से कार्य करेगी। इस अवसर पर जोन अध्यक्ष राजेश जैन, डॉक्टर अरुण जैन, मोहित गोलछा, अंशुल जैन, विपिन जैन, लोकेश सेठिया, भारत बैंगनी, अनिल रांका, चंद्रकांत चौरडिया, चैनरूप जैन, मोहित जैन, अभिषेक जैन, अनुज जैन, अभिषेक गुप्ता, डॉ. संस्कृति जैन, रोहित जैन, रमेश बंसल, अनिल सिंगला, नरेश बंसल, राकेश जैन आदि मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

नवीन बागाण बने मंडल ओबीसी मोर्चा के अध्यक्ष

बहल। बहल क्षेत्र के सामाजिक कार्यकर्ता नवीन बागाण बिधनोई को भारतीय जनता पार्टी ने बड़ी जिम्मेवारी दी है। नवीन को ढिगावा मंडल का ओबीसी मोर्चा का अध्यक्ष नियुक्त किया है और उनको ओबीसी मोर्चा की कार्यकारिणी गठित करने का अधिकार दिया है। नवीन की नियुक्ति की घोषणा शनिवार को जिलाध्यक्ष विरेन्द्र कौशिक व ओबीसी मोर्चा जिलाअध्यक्ष महेन्द्र डूषसह यादव ने की। वहीं, बहल क्षेत्र के गांव लाडावास निवासी युवा भाजपा कार्यकर्ता राममेहर लाडावास को भारतीय जनता युवा मोर्चा का ढिगावा मंडल का अध्यक्ष नियुक्त किया है। नवीन बागाण व राममेहर की नियुक्ति पर बहल व ढिगावा मंडल के भाजपा कार्यकर्ताओं ने खुशी जताई है व नियुक्ति के लिए सीएम नायब सैनी, प्रदेशाध्यक्ष मोहनलाल बड़ौली, पूर्व मंत्री जेपी दलाल, जिलाध्यक्ष विरेन्द्र कौशिक सहित अन्य नेताओं का आभार जताया है।

श्याम बाबा के भव्य जागरण में उमड़ी भीड़

बवानीखेड़ा। वार्ड नं 12 नजदीक प्रणामी मंदिर में श्री श्याम बाबा के दूसरे भव्य जागरण का आयोजन बड़े श्रद्धा और भक्ति भाव के साथ किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में नगर पालिका अध्यक्ष सुंदर अत्री, विशिष्ट अतिथि के रूप में समाजिक संस्था से जुड़े समाजसेवी मनीष शंकर ने शिरकत की। उन्होंने दरबार में माथा टेककर क्षेत्र की सुख-समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की। जागरण के दौरान गायक संदीप रोहिला, सुरेश जांगड़ा आदि कलाकारों ने बाबा श्याम के भजनों की प्रस्तुति देकर भक्तजनों का मन मोह लिया। नगर पालिका अध्यक्ष सुंदर अत्री ने कहा कि ऐसे धार्मिक कार्यक्रम समाज में आपसी भाईचारे और धार्मिक भावना को मजबूत करते हैं। इस अवसर पर बिजेंद्र रोहिल्ला, नवीन, जितेंद्र, रविन्द्र रोहिल्ला सहित अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे।

स्कूली वाहन कर रहे यातायात नियमों की अवहेलना, दुघर्टना की आशंका

सीटिंग 9 जमा एक, क्रूजर में बैठाए 19 प्लस वन विद्यार्थी

पुलिस के रुकवाते ही बच्चों को नीचे उतारना किया शुरू, यातायात एसएचओ ने काटा 3 हजार रुपये का चालान

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

लगता है कि स्कूली वाहन किसी बड़े हादसे के इंतजार में है। क्रूजर में 9 सवारी व एक चालक की सीट पास है, लेकिन एक निजी स्कूल की क्रूजर में 19 विद्यार्थी के साथ एक चालक बैठा हुआ था। हालांकि यातायात पुलिस के रूकवाते ही चालक ने दो बच्चों को बीच सड़क पर उतार दिया। उसके बाद भी क्रूजर में 17 बच्चे व एक चालक सवार मिला। यातायात पुलिस ने वाहन चालक से कागजात मांगे तो वे कागजात पूरे नहीं दिखा पाए।

इस पर यातायात पुलिस ने उक्त क्रूजर वाहन का तीन हजार रुपये का मौके पर ही चालान काट दिया। चालान फीस भरने के बाद ही स्कूली वाहन वहां से रवाना हुआ। यह वाक्या राधा स्वामी सत्संग भवन मिनी बाईपास का है। यातायात पुलिस के इस तरह के अभियान की वजह से वाहन चालकों में हड़कम्प मच गया। उल्लेखनीय है कि क्षमता से ज्यादा बच्चे बैठाने पर हमेशा दुर्घटना घटने की आशंका बनी रहती है। उसके बावजूद भी वाहन चालक इन जोखिम को इगनोर करते हुए क्षमता से ज्यादा बच्चे बैठा रहे है।

भिवानी। यातायात थाना प्रभारी द्वारा रूकवाई गई स्कूली क्रूजर वाहन से उतरे बच्चे।

प्रत्येक बच्चे से लिया जाता है यातायात शुल्क

यहां यह बताते चले कि निजी स्कूलों में पढने वाले हरेक बच्चे से यातायात शुल्क लिया जाता है। चाहे बच्चा छोटा हो या फिर बड़ा। पर जब बच्चों को वाहन में बैठाने की बारी आती है तो एक सीट पर छोटे तीन तीन बच्चों को बैठा दिया जाता है। दो बच्चों वाली सीट पर चार व पांच छोटे बच्चे बैठाना आम बात है। अगर कोई अभिभावक इस पर ऐतराज करता है तो स्कूल संचालक उनकी बातों को अनसुना करके इसी तरह से रोजाना बच्चों को स्कूलों में ला रहे है। दूसरी तरफ कायदे से एक सीट पर केवल एक ही बच्चा बैठाया जाना चाहिए। साथ ही बच्चों को लाने व ले जाने वाले वाहन में सीसीटीवी कैमरे व अन्य सुविधांए भी होनी निहायत जरूरी है। पर किसी भी वाहन में इस तरह की कोई सुविधा नहीं है।

ड्राइवर के पास नहीं थे कागाजत : संजय

यातायात थाना प्रभारी संजय कुमार ने बताया कि विगत में उपायुक्त व एसपी ने सभी पुलिस अधिकारियों की मीटिंग बुलाई थी। बैठक में दोनों अधिकारियों ने सभी पुलिस जवानों को इस तरह के वाहनों व उनमें ठूंस कर सवारी बैठाने वाले वाहनों के चालान आदि काटने के भी निर्देश दिए थे। उसी क्रम में शनिवार को मिनी बाईपास के पास स्कूली बच्चों की एकक्रूजर को रुकवाया गया था। पुलिस के द्वारा गाड़ी रुकवाते ही उसमें से दो बच्चे उतर गए। बाद में क्रूजर में 17 बच्चे और बैठे मिले। जिनको उतार कर चालक से कागजात मांगे तो सभी कागजात नहीं दिखा पाया। उक्त गाड़ी चालक का मौके पर ही तीन हजार रुपये का चालान काटा गया है। साथ ही वाहन चालकों से कहा गया है कि वे निर्धारित क्षमता से ज्यादा सवारी न बैठाए। ज्यादा सवारी बैठाने के बाद ही वाहन असंतुलित होता है। अत्यधिक सवारियां होने से बड़ी दुघर्टना का भी खतरा बढ़ जाता है।

तैयारियों के लिए निकाले जाएंगे दो जत्थे

नौ को बाढड़ा में होगी किसान मजदूर जनसभा: सुमेर सिंह

- 24 को नई दिल्ली स्थित रामलीला मैदान में आयोजित होगी विशाल रैली

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बाढ़ड़ा

9 मार्च को अनाज मंडी बाढडा में आयोजित होने वाली किसान मजदूर जनसभा कि तैयारियों के लिए माक्रसवादी पार्टी के कार्यकर्ता ने कस्बे के गांव जीतपूरा, जगरामबास, जेवली, बाढडा, कारी धारणी, कारी रुपा, कारी मोद आदि गांवों में जनसंपर्क अभियान चलाया गया। अभियान कील अध्यक्षता भूप सिंह ने की ।

माक्रसवादी 16युनिस्ट पार्टी के सचिव कामरेड सुमेर सिंह बताया कि पार्टी कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्तर राज्य स्तर जिला स्तर जिसमें,केंद्रीय कमेटी सदस्य, कामरेड हेमलता ,माकपा पुर्व सचिव कामरेड सुरेंद्र मलिक,,सीटू राज्य महासचिव जय भगवान ,किसान सभा,राज्य महासचिव सुमित दलाल और पार्टी जिला सचिव कामरेड ओम प्रकाश भाग लेंगे और कहा कि केंद्र में सतारूढ भारतीय जनता पार्टी सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ 24 मार्च को नई दिल्ली के रामलीला मैदान में एक विशाल रैली आयोजित करने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि इस रैली की तैयारियों के लिए हरियाणा भर में दो जत्थे निकाले जाएंगे, जिनमें पार्टी का राष्ट्रीय नेतृत्व भी शामिल रहेगा। यह जत्था अभियान के तहत ९ मार्च को बाढड़ा पहुंचने पर किसान मजदूर जनसभा आयोजित की जाएगी। जिसको पार्टी के राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय नेता संबोधित करेंगे। रेली में इलाके से सैकड़ों कार्यकर्ता, मजदूर, किसान, महिलाएँ, युवा और आम नागरिक रैली में भाग लेंगे। उन्होंने कहा कि 24 मार्च को होने वाली इस रैली में देशभर से मजदूरों, किसानों, महिलाओं, युवाओं और आम नागरिकों की व्यापक भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। उन्होंने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार की नीतियों के कारण रोजगार, खेती, सार्वजनिक सेवाओं और श्रमिक अधिकारों पर गंभीर असर पड़ रहा है। भाजपा सरकार अपनी भेदभाव पूर्ण नीतियों से समाज के हर वर्ग को परेशान करने का काम कर रही हैं। 24 मार्च को होने वाली विशाल रैली में सरकार की भेदभाव पूर्ण नीतियों का मुंह तोड़ जवाब देने का काम किया जाएगा।

किसानों ने सरसों व गेहूं की एमएसपी पर सरकारी खरीद सुनिश्चित करने की मांग की

- संयुक्त किसान मोर्चा का 235वें दिन अनिश्चिकालिन धरना जारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ लोहारू

संयुक्त किसान मोर्चे द्वारा स्थानीय उपमंडल परिसर जारी अनिश्चितकालीन महापड़ाव के 235 वें दिन धरने को संबोधित करते हुए सूबेदार धनपत सिंह ने कहा कि हरियाणा में किसान सरसों की कटाई शुरू कर दी है और जल्द ही सरसों की फसल मंडी में आनी शुरू हो जाएगी। इसलिए समय रहते सरकार एमएसपी पर सरसों की खरीद की व्यवस्था करें।

किसान नेता मांगें राम चहड़ कलां ने कहा कि हरियाणा सरकार किसानों का 2023 का कपास बीमा क्लेम राशि समय रहते किसानों के खातों में जमा करवाए वरना किसान बड़े आंदोलन को मजबूर होंगे। इसके लिए किसानों की टीमें गांव-गांव में जाकर लोगों से संपर्क करके उन्हें आन्दोलन में भाग लेने को तैयार करेंगे। शेर सिंह झांझड़ा हसनपुर ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार आम आदमी के हितों को अनदेखा करके नित नए नए फरमान जारी कर रही हैं जिससे आम जनता आने वाले समय में शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार से वंचित हो जाएंगे। धरने को प्रताप राव , सतबीर फरटिया, दलबीर सिंह, सुनील कुमार, देवीदयाल, विजय गुरावा, सुमेर सिंह गिगनाऊ, नरेन्द्र फरटिया भीमा ने संबोधित किया।

लोहारू। लोहारू में अनिश्चितकालीन धरने पर बैठे किसान नारेबाजी करते हुए।

जयपुरी मस्कट करेगा खुले में कचरे का निस्तारण

- गंदगी से मुक्त बनाकर अपने शहर को स्वच्छ सर्वेक्षण में लाएं नंबर वन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

जगह-जगह कूड़ा फेंककर शहर को गंदा बनाने वाले लोगों को समझाने के लिए नगर परिषद हर संभव प्रचार प्रसार के नए-नए प्रयोग कर रही है। इसी कड़ी में नगर परिषद ने जयपुर से मस्कट मंगवाया है, जो नागरिकों से आवाहन कर रहा है कि आप सड़कों पर दुकानों के सामने कहीं पर भी कूड़ा कचरा ना फेंके। स्वच्छ सर्वेक्षण 2025 में छोटी काशी भिवानी शहर को देश भर में साफ सुथरा शहरों अव्वल स्थान पाने वालों में शामिल करने में अपना योगदान दें। इस मस्कट को फिलहाल सामान्य अस्पताल के पीछे कृष्णा कॉलोनी में एक ढाबे के सामने रखा गया है। यह मस्कट यहां पर लोगों को कूड़ा नहीं डालने की अपील कर रहा है। स्वच्छ सर्वेक्षण में मंत्रालय से आने वाली टीम द्वारा शहरी क्षेत्र में स्वच्छता व बारिश के पानी निकासी को लेकर किए गए कार्य देखे जाएंगे। मंत्रालय की टीम द्वारा सार्वजनिक शौचालयों की स्थिति को देखा जाएगा। डोर-टू डोर कचरा कलेक्शन व गीला तथा सूखा कचरे की स्थिति की जानकारी ली जाएगी। कचरा निस्तारण प्वाइंट की पूरी जानकारी ली जाएगी। शहर में स्वच्छता की स्थिति के साथ-साथ सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट से सीवरेज के पानी को साफ करने व उसके रीयूज की स्थिति जानी जाएगी।

भिवानी। शहर में अवैध कचरा प्वाइंट पर लगाया गया जयपुरी मस्कट

नगर परिषद् कर रहा है हर संभव प्रयास

स्वस्थ सर्वेक्षण के चलते नगर परिषद द्वारा शहर को गंदगी से मुक्त बनाने के लिए हर संभव प्रयास किया जा रहे हैं। इसके साथ ही नगर परिषद ने शहर में 12 कचरा पॉइंट का सौंदर्य करण किया है। वहीं लोगों से अपील की है कि सड़कों पर कूड़ा कचरा ना डालें। कूड़ा कचरा डालने वालों पर नगर परिषद द्वारा शक्ति बढ़ती जा रही है। 5000 तक के चालान नगर परिषद करती है।

गंदगी की फोटो नगर परिषद के नंबरों पर भेजें

नगर परिषद के जिला नगर आयुक्त गुलजार मलिक ने बताया कि गंदगी की समस्या से निजात के लिए नगर परिषद प्रशासन द्वारा 8053609453 और 8053609445 नंबर जारी किए गए हैं, जिन पर नागरिक गंदगी की समस्या का फोटो भेज सकते हैं। नगर परिषद द्वारा तुरंत प्रभाव से सफाई करवाकर और वापिस संबंधित व्यक्ति के पास में सफाई का फोटो भेजा जाता है। उन्होंने ने बताया कि यदि किसी दुकान के पास अत्यधिक कूड़ा कचरा इकट्ठा होता है तो वे नगर परिषद में संपर्क करें। उस स्थान पर इस मस्कट को 2 दिन रखा जाएगा।

बेस्ट मदर प्रतियोगिता में 20 महिलाओं ने लिया भाग

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बवानीखेड़ा

बवानीखेड़ा क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले गांव पुर में महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा सर्कल स्तरीय बेस्ट मदर प्रतियोगिता का आयोजन सुपरवाइजर मोनिका की देखरेख में करवाया गया। प्रतियोगिता मे कुंगड़ सर्कल की लगभग बीस प्रतिभागियों ने भाग लिया।

इस दौरान आंगनवाड़ी वर्कर सुमन बाला, सुनेहरी, सुशीला, गुलाबकौर, रानी, सरोज, गीता, प्रियंका, प्रमिला आदि ने अपनी विशेष उपस्थिति दर्ज कराई। हालांकि इस प्रतियोगिता का परिणाम अगले सप्ताह घोषित किया जाएगा। इसमें प्रथम तीन स्थान पर आने वाली प्रतिभागियों को ब्लॉक लेवल पर परीक्षा देनी होगी। सुपरवाइजर मोनिका ने बताया कि ये विभाग की अनूठी पहल है जिससे महिलाओं में जागरूकता के साथ साथ नई सीख सीखने को मिलती है और वे इसे धरातल पर अपने केन्द्रों में बच्चों तक साझा कर उनके विकास में सहायक सिद्ध कर सकती हैं।

बवानीखेड़ा। प्रतियोगिता में भाग लेती हुई महिलाएं। *फोटो : हरिभूमि*

ब्लाक स्तर पर भतेरी गोकुलपुरा बनी बेस्ट मदर

बहल। महिला एवं बाल विकास विभाग की जिला कार्यक्रम अधिकारी वैशाली तथा सीडीपीओ ऊषा रानी के मार्गदर्शन से ब्लॉक बहल में बेस्ट मदर कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रतियोगिता का आयोजन सुपरवाइजर वंदना, ललिता, रितु नागर के नेतृत्व किया गया। प्रतियोगिता में बहल ब्लॉक के विभिन्न गांवों से महिलाओं ने भाग लिया। प्रतियोगित में ब्लाक स्तर पर भतेरी गोकुलपुरा पहला,रीना चहड कलां दूसरा,शमी रानी हरियावास ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन नं. : 8814999151, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

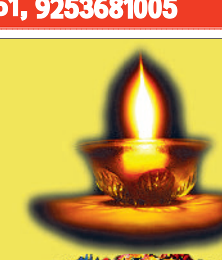

हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज़ पर मान्य। अन्य किसी साईज़ के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
भिवानी : हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन : 8814999170, दादरी : 9253681008

पदोन्नति पाने वाले खंड शिक्षा अधिकारी हुए सम्मानित

- गांव झुप्पा कलां में आयोजित हुआ सम्मान समारोह

हरिभूमि न्यूज ▶▶ लोहारू

हाल ही शिक्षा विभाग में पदोन्नति पाकर खंड शिक्षा अधिकारी के पद पर आसीन हुए सभी चारों खंड शिक्षा अधिकारियों को गांव झुप्पा कला में सम्मान समारोह आयोजित कर सम्मानित किया गया और उन्हें बधाई दी गई।

बता दें कि हाल ही में फतेह सिंह को बीईओ बावल, सुरेश कुमार को बीईओ नाहड़, डॉ हीरालाल को बीईओ सिवानी, दर्शना कुमारी श्योराण को बीईओ बहल के रूप में पदोन्नति मिली है। सेवानिवृत्त जिला शिक्षा अधीक्षक दर्शनानंद नेहरा के संयोजन में आयोजित कार्यक्रम में लोहारू खंड शिक्षा अधिकारी विजय प्रभा, सरपंच प्रतिनिधि मीर सिंह, जयवीर सिंह, और राजेंद्र सिंह की की उपस्थिति में त्रिवेणी रोपित कर सम्मानित किया गया और एक एक पौधा प्रदान किया गया। सभी पदोन्नति प्राप्त करने वाले खंड शिक्षा अधिकारियों को पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम में सभी शिक्षा अधिकारियों ने आगामी नए शैक्षणिक सत्र में विशेष अभियान चलाकर सरकारी स्कूलों में छात्र संख्या बढ़ाने का आह्वान किया और सरकार द्वारा विद्यार्थियों को सरकारी विद्यालयों में दी जाने वाली सुविधाओं से अवगत करवाया गया। इस मौके पर स्कूल स्टाफ द्वारा पंचायत समिति चेयरमैन प्रतिनिधि कृष्ण मान झुंपा की उपस्थिति में सभी बीईओ को स्मृति चिन्ह भी दिया गया।

कार्यक्रम में भीमसिंह, यशपाल बाबू, प्रदीप नेहरा, राजेश, सुनीता, शीतल, प्रवीण, सतपाल, कुलदीप, राजेश, सुनील, नरेश मान, महेंद्र श्योराण, ईश्वर श्योराण, जोखीराम आदि मौजूद रहे।

लोहारू। गांव झुप्पा कलां में खंड शिक्षा अधिकारियों को सम्मानित कर प्रदान किए गए पौधे। *फोटो : हरिभूमि*

यात्रा का ग्राम स्वराज किसान मोर्चा ने किया समर्थन, गिरफ्तारी की उठाई मांग

मनीषा हत्याकांड: न्याय की मांग को लेकर निकाली पैदल यात्रा

मनीषा को न्याय दिलाना केवल उसके परिवार की नहीं, पूरे समाज की जिम्मेदारी: खरेटा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

गांव ढाणी लक्ष्मणपुरा निवासी मनीषा मौत मामले में न्याय की धीमी प्रक्रिया और सीबीआई जांच की रिपोर्ट सार्वजनिक न होने के विरोध में शनिवार को सर्वसमाज न्याय समिति द्वारा आयोजित पैदल न्याय यात्रा में भारी जनसैलाब देखने को मिला। यात्रा में मोर्चा के युवा प्रदेश अध्यक्ष युद्धवीर खरेटा के नेतृत्व में युवाओं के बड़े जत्थे ने शिरकत की और आरोपियों की तुरंत गिरफ्तारी व सख्त सजा की मांग बुलंद की। पैदल यात्रा गांव ईशरवाल से गांव ढाणी लक्ष्मणपुरा तक चली, जिसमें मौजूद युवाओं को संबोधित करते हुए युद्धवीर खरेटा ने शासन और प्रशासन को आड़े हाथों लिया।

उन्होंने कहा कि मनीषा हमारी बहन थी और उसे न्याय दिलाना केवल उसके परिवार की नहीं, बल्कि पूरे समाज की जिम्मेदारी है। सीबीआई द्वारा निर्धारित समय सीमा बीत जाने के बाद भी जांच रिपोर्ट को सार्वजनिक ना करना और दोषियों को खुला छोड़ना व्यवस्था पर सवालिया निशान है।

मोर्चा का हर युवा इस न्याय की लड़ाई में कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा है, जब तक दोषियों को फांसी के फंदे तक नहीं पहुंचाया जाता, हम चैन से नहीं बैठेंगे। गौरतलब हैं कि पैदल न्याय यात्रा मनीषा के पैतृक गांव ढाणी लक्ष्मण से शुरू हुई। यात्रा का मुख्य उद्देश्य प्रशासन पर दबाव बनाना है ताकि मामले की परतों को खोला जा सके। यात्रा का अंतिम लक्ष्य 9 मार्च को भिवानी पहुंचकर उपायुक्त को ज्ञापन सौंपना रहेगा। इस मौके पर अनिल तलवानी, संदीप बुड़च, अजीत ख्यालिया कारीवास, सुनील नूनसर, विकास गोठड़ीवाले, दीपक जांगड़ा हसान, डॉ. सुनील देवास, हवासिंह वर्मा, कृष्णा जैनावास व शक्तिसिंह रोढ़ा आदि शामिल रहे।

भिवानी। मनीषा हत्याकांड की जांच को लेकर निकाली पैदल न्याय यात्रा में शामिल लोग। *फोटो : हरिभूमि*

हर क्षेत्र में फहरा रहा आधी आबादी का परचम

अब वो दिन लद गए, जब आधी आबादी के लिए कुछ निश्चित कार्यक्षेत्र ही हुआ करते थे। आज के दौर में बेटियां हर उस क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं, जिन्हें पहले उनके लिए वर्जित माना जाता था। देश की सुरक्षा से लेकर वैज्ञानिक अनुसंधान तक और खेल के मैदानों में भी कामयाबी की नित नई मिसालें गढ़ रही हैं। आधी आबादी के विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ते कदम पर एक नजर।

कवर स्टोरी / लोकमित्र गौतम

अभी सुबह के 4 बज रहे हैं। हरियाणा के एक छोटे से गांव में रहने वाली 19 साल की एक लड़की अपने जूतों में फीते कस रही है। उसके सामने कोई दर्शक नहीं है, कोई कैमरा नहीं है। है तो सिर्फ एक लंबा सा ट्रैक और दिल दिमाग में एक रंगीन सपना। यह सपना एथलेटिक्स में कुछ कर दिखाने का है। यह सपना किसी एक हरियाणवी लड़की का ही नहीं है, बल्कि आज भारत की हजारों-लाखों किशोरियों और युवतियों की आंखों में खेल से लेकर सेना और विज्ञान जैसे सभी जटिल और एक जमाने तक पुरुषों के वर्चस्व वाले क्षेत्र में कुछ कर दिखाने का है। साल 2026 का भारत इस मायने में ऐतिहासिक दौर से गुजर रहा है, क्योंकि आज कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहां युवा महिलाएं दस्तक न दे रही हों। अब देश में कोई ऐसा क्षेत्र विशेष नहीं रहा, जिसे एक्सक्लूसिविली पुरुषों का वर्चस्व वाला क्षेत्र कहा जा सके। सभी क्षेत्रों में पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर भारत की युवा महिलाएं खड़ी हैं।

गढ़ रहीं जीत की नई परिभाषा

भारत में खेल लंबे समय तक पुरुषों के वर्चस्व वाला क्षेत्र माना जाता रहा है। लेकिन हाल के कुछ दशकों में युवा महिलाओं ने इस धारणा को बदल दिया है। हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, पूर्वोत्तर भारत आदि की युवा महिला एथलीटों ने ओलंपिक, एशियाई खेलों, राष्ट्रमंडल खेलों और विश्व चैंपियनशिप में कामयाबी के झंडे गाड़े हैं। साल 2024 के पेरिस ओलंपिक में भारत की महिला खिलाड़ियों ने कुल पदकों में महत्वपूर्ण योगदान दिया और उसके पहले कई ओलंपिक खेल ऐसे भी संपन्न हुए हैं, जब भारत की तरफ से कामयाबी का सेहरा सिर्फ लड़कियों के सिर बंधा है। आज बैडमिंटन, शूटिंग, क्रिकेट, हॉकी, रेसलिंग और बॉक्सिंग ये ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें भारत की बेटियां राज कर रही हैं। अब देश के गांवों से युवा महिला पहलवान और मुक्केबाज निकल रही हैं। खेलों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी का एक महत्वपूर्ण कारण है, खेलों को लेकर शुरू की गईं कई शानदार सरकारी योजनाएं, जिसमें एक प्रमुख योजना 'खेलो इंडिया' भी शामिल है। इसमें बेहतर प्रशिक्षण की बदौलत भारतीय लड़कियां पूरी दुनिया में कामयाबी के झंडे गाड़ रही हैं। लेकिन इससे बड़ा परिवर्तन उन भारतीय परिवारों का है, जो उनकी मानसिकता में आया है। अब गांवों में भी मां-बाप बेटियों को खेल के मैदान में खुशी-खुशी भेजने लगे हैं। जबकि एक समय तक उन्हें सिर्फ शादी के लिए पाल पोसकर बड़ा किया जाता था।

संभाल रहीं सुरक्षा की कमान

लंबे समय तक भारतीय सेना महिलाओं के लिए बहुत सीमित अवसर प्रदान करती रही है। लेकिन पिछले कुछ दशकों में यह स्थिति तेजी से बदली है। आज युवा महिलाएं न केवल बड़ी संख्या में सैन्य अधिकारी बन रही हैं बल्कि लड़ाकू विमान उड़ा रही हैं, वे युद्ध पोतों पर तैनात हैं। भारतीय वायु सेना में महिला फाइटर पायलटों की संख्या लगातार बढ़ रही है। साल 2003 के बाद राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए) में महिलाओं के प्रवेश ने इस बदलाव को गति दी है। अब 18-19 वर्ष की लड़कियां सीधी एनडीए में प्रशिक्षण लेकर सेना की स्थायी अधिकारी बन रही हैं। यह बदलाव सिर्फ सैन्य संरक्षण का बदलाव नहीं है बल्कि सामाजिक सोच में आए परिवर्तन का संकेत है। एक समय था, जब सेना को पूर्णतः पुरुषों का पेशा माना जाता था। लेकिन अब युवा महिलाएं सीमा की सुरक्षा में कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी हैं। नौसेना में भी महिलाएं युद्ध पोतों पर तैनात हैं। लंबी समुद्री यात्राओं का हिस्सा हैं और यह साबित कर रही हैं कि शारीरिक और मानसिक क्षमता के मामले में महिलाएं किसी भी तरह से पुरुषों से कम नहीं हैं। पुरुषों के समान ही वे भारतीय सीमाओं की रक्षा में कंधे से कंधा मिलाकर बढ़ रही हैं।

हासिल कर रहीं वैज्ञानिक उपलब्धियां

विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में भी युवा महिलाएं बड़ी तेजी से आगे बढ़ रही हैं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), राष्ट्रीय रक्षा अनुसंधान संगठन (डीआरडीओ) और विभिन्न वैज्ञानिक संस्थानों में महिलाओं की न केवल भागीदारी बहुत तेजी से बढ़ रही है बल्कि कई क्षेत्रों में तो वो पुरुषों से भी आगे हैं। हाल के सालों में देश के सबसे महत्वपूर्ण माने गए चंद्रयान और मंगलयान जैसे अंतरिक्ष मिशनों में भारतीय महिला वैज्ञानिकों की कामयाबी देखते ही बनी है। यही कारण है कि आज देश में विज्ञान के क्षेत्र में दाखिला लेने वाली लड़कियों की बड़ी संख्या सामने आ रही है, क्योंकि आज भारत की एक नहीं बल्कि अनेक अंतरिक्ष अभियानों में भारत की युवा महिलाएं कामयाबी का श्रेय हासिल कर रही हैं। अंतरिक्ष विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और रक्षा अनुसंधान में भी इनकी भूमिका और योगदान पुरुषों से पीछे नहीं है। आईआईटी, आईआईएससी और अन्य प्रमुख वैज्ञानिक संस्थानों में जाकर देख लीजिए, आज ज्यादातर जगहों में महिला छात्र, पुरुष छात्रों के बराबर हैं, कहीं कुछ कम हैं। ये छात्राएं न केवल पढ़ाई कर रही हैं बल्कि अपनी मौलिक मेधा से अपने लक्षित कार्यक्रमों में सफलता हासिल करके उपलब्धियों की नई कहानी रच रही हैं। *

बदल रही है सामाजिक मानसिकता

हमारी बेटियों को यह शानदार सफलताएं मिल रही हैं, तो इसमें समाज की सोच और उसके नजरिए में बदलाव का भी बड़ा योगदान है। पहले जहां बेटियों के लिए सीमित विकल्प होते थे, अब वे हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं। छोटे शहरों से आने वाली युवा महिलाएं अब राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी प्रतिभा बिखेर रही हैं। डिजिटल शिक्षा, इंटरनेट, सोशल मीडिया ने भी इस परिवर्तन में बड़ी भूमिका निभाई है। इसलिए अब समाज के विभिन्न तबकों से उठकर आने वाली महिलाएं अपने आपको भावी रोल मॉडल में देख सकती हैं और उनसे प्रेरणा हासिल की जा सकती है। हालांकि यह अलग बात है कि अभी महिलाओं ने अपने हिस्से की सारी जंग जीती नहीं है। अभी भी अनेक किस्म की चुनौतियां मौजूद हैं। लेकिन चुनौतियां तो हर क्षेत्र में हैं। असली बात यह है कि महिलाएं लगातार हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। हालांकि कुछ मां-बाप जिनकी वजह से महिलाओं की अभी भी पिछड़ी सोच है, उन्हें जल्द से जल्द अपने को बदलना होगा। नहीं तो वो लोग इन्हें अपने साख से खारिज कर देंगे, जिनकी नजरों में लड़का और लड़की बराबर है। आज के इस एआई दौर में एआई का विश्लेषण बताता है कि आने वाले भविष्य में लड़कियों की मौजूदगी और भी महत्वपूर्ण होगी। विशेषकर इस लिहाज से भी कि अब नई पीढ़ी में लड़कियां जाति और लिंग से परिभाषित नहीं होतीं। अपने काम और काम में हासिल महारत से सम्मान पा रही हैं।

बीते कुछ दशकों में हमारे समाज की महिलाएं घर-परिवार की जिम्मेदारी संभालने के साथ कार्यक्षेत्र में भी शानदार मुकाम हासिल करने लगी हैं। यह नया सामाजिक बदलाव, परिवार और कार्यक्षेत्र में संतुलन की उनकी कुशल भूमिका से ही संभव हो पा रहा है।

परिवार-कार्यक्षेत्र में संतुलन बनातीं महिलाएं

बदलाव / अपराजिता

आठ मार्च, अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, केवल एक उत्सव का दिन नहीं है। यह गहरे सामाजिक परिवर्तन और प्रतीक का दिन भी है। यही प्रतीकात्मक परिवर्तन, भारत की युवा महिलाओं की सोच, प्राथमिकताओं और जीवन के निर्णयों में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रहा है। एक जमाना था, जब अधिकांश युवतियां विवाह को ही सबसे जरूरी लक्ष्य मानकर जीवन जीती थीं। लेकिन आज भारत की युवा नारी के लिए विवाह एकमात्र जीवन लक्ष्य नहीं है बल्कि यह उसके जीवन के कई विकल्पों में से एक है। भारत की युवा महिलाएं करियर, आत्मनिर्भरता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को इन दिनों बराबर का महत्व दे रही हैं और उनकी प्राथमिकता में यह सब अचानक नहीं आया, इसके पीछे दशकों की शिक्षा, आर्थिक अवसरों का विस्तार तथा आत्मसम्मान की नई जागृति ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन्हीं सबके चलते विवाह जो कभी जीवन का एकमात्र प्रथम और आखिरी लक्ष्य हुआ करता था, आज की महिलाओं के लिए वह एक वैकल्पिक बन चुका है।

सोच में आया बड़ा बदलाव: पहले के दौर में जहां लड़कियां परिवार और समाज के दबाव में अपनी शिक्षा और करियर को लेकर समझौता कर लेती थीं, आज वे कतई ऐसा नहीं कर रही हैं। आज युवा महिलाएं अपनी पहचान का केंद्र विवाह को नहीं, अपनी निजी उपलब्धियों (जिनमें करियर और उनकी अपनी रचनात्मकता शामिल है) को विवाह से कहीं ज्यादा तरजीह दे रही हैं। आज की युवा महिलाएं पहले अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती हैं, अपनी आर्थिक और मानसिक स्वतंत्रता सुनिश्चित करना चाहती हैं, इसके बाद विवाह के बंधन में बंधती हैं। दिल्ली, बेंग्लुरु, मुंबई, पुणे, हैदराबाद, चेन्नई और कोलकाता ही नहीं बल्कि रांची, लखनऊ और जयपुर जैसे शहरों में भी अब यह बदलाव तेजी से देखने को मिल रहा है। आज इन शहरों में ही नहीं बल्कि छोटे-छोटे कस्बों में भी युवा महिलाओं की विवाह की उम्र बहुत आसानी से 28 से 30 साल के बीच हो गई है। जबकि एक जमाना था, जब किसी महिला की 20 साल तक अगर शादी नहीं होती थी, तो घर-परिवार में हंगामा मच जाता था। यही नहीं आज देश में 8 करोड़ से ज्यादा महिलाएं अपने स्वतंत्र निर्णय के चलते बिना विवाह किए रह रही हैं। आज के 30-40 साल पहले इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। वास्तव में महिलाओं में आया यह बदलाव सिर्फ शादी की उम्र में देरी का बदलाव नहीं है बल्कि उनकी सोच में अपने प्रति आई परिपक्वता का बदलाव है।

मनमुताबिक ले रहीं निर्णय: अब महिलाएं बड़ी सहजता से अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के संबंध में निर्णय लेने लगी हैं और यह निर्णय केवल घर से हजारों किलोमीटर दूर जाकर काम करने भर का नहीं है बल्कि यह निर्णय इस मामले में भी है कि उन्हें किस क्षेत्र में अपना करियर बनाना है, कब विवाह करना है और किस तरह की जीवनशैली अपनानी है? डिजिटल युग ने युवा महिलाओं की इस स्वतंत्रता को नए सिरे से मजबूत किया है। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने महिलाओं को जानकारी देने, उन्हें प्रेरित करने और आगे बढ़ने के कई नए अवसर प्रदान किए हैं। आज की युवा महिलाएं देश ही नहीं दुनिया को अपनी नजरों से देख सकती हैं, समझ सकती हैं और अपने संबंध में बेहतर विकल्प चुन सकती हैं। यह स्वतंत्रता केवल व्यक्तिगत नहीं है बल्कि सामाजिक परिवर्तन का संकेत भी है। इस बदलाव में परिवार की भूमिका भी कहीं न कहीं शामिल है। *

बदलती प्राथमिकताओं की नई तस्वीर

- भारत की महिलाओं की औसत विवाह आयु अब 20 से 22 वर्ष से बढ़कर 25 से 28 वर्ष हो चुकी है।
- उच्च शिक्षा में छात्राओं की भागीदारी अब 59 फीसदी तक पहुंच गई है।
- सिविल सेवा परीक्षा में उनकी सफलता की दर बढ़कर 30 से 35 प्रतिशत हो चुकी है।
- स्टार्टअप के इकोसिस्टम में भी अब महिलाएं अपनी हिस्सेदारी हासिल कर रही हैं। आज हजारों की तादाद में युवा महिलाएं हैं, जिनके अब स्टार्टअप चल रहे हैं और उनकी यह संख्या लगातार बढ़ रही है।
- कॉरपोरेट क्षेत्र में महिला कर्मचारियों की भागीदारी लगातार बढ़ रही है।
- डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से लाखों महिलाएं स्वरोजगार से भी जुड़ रही हैं। इस तरह अब नई पीढ़ी की महिलाएं आत्मनिर्भर ही नहीं बल्कि निर्णायक बन रही हैं।

कविता / कुसुम अग्रवाल

एक सपना

मैंने देखा था इक सपना
सपने में थी मोटर-कार।
स्टेयरिंग, सीटें, सब कुछ उसमें,
पर नहीं थे पहिए चार।
मैंने सोचा, 'कैसे दौड़े?
कैसे पकड़ेगी रफ्तार?'
एक जगह जो खड़ी रहे तो
हो जाए बिल्कुल बेकार।
हंसकर बोली मोटर मुझसे,
जान गई हूं मन की बात।
पहिए तुम्हें जोड़ने होंगे
तब दौड़ूंगी दिन एक रात।
पहला पहिया साहस का हो,
दूजा हो आत्मविश्वास।
तीसरा पहिया मेहनत वाला
चौथा दृढ़ संकल्प-प्रयास।
जब ये चारों संग जुड़ेंगे,
राह सरल बन जाएगी।
जीवन रूपी गाड़ी तब ही
मंजिल तक पहुंचाएगी।

लघुकथाएं

सपनों की उड़ान

'तुम्हारे जाने की टिकट बुक करवा दूं?' दिवेश का मैसेज आए आधे घंटे हो चुके थे, लेकिन रीमा को कोई जवाब सूझ नहीं रहा था। मन कुछ कह रहा था, दिमाग कुछ और!

थोड़ी देर में दिवेश का फोन आया, उसने पूछा, 'क्या हुआ तुमने कोई जवाब नहीं दिया?' 'क्या जवाब दूं, समझ नहीं आ रहा मुझे!' रीमा बुझे स्वर में बोली।

'लिटरेचर का इतना बड़ा सेमिनार है, लेकिन तुम सब को छोड़कर हफ्ते भर के लिए बाहर जाना सही नहीं रहेगा। मेरा ध्यान यहीं लगा रहेगा।' इतना कह रीमा ने फोन रख दिया।

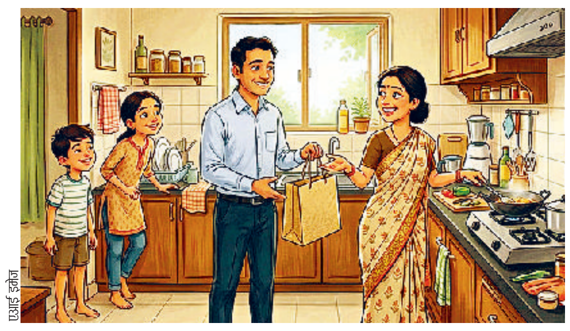

एआई इमेज

शाम को दिवेश दफ्तर से आए। सभी रुटीन के हिसाब से अपने-अपने काम में लगे थे। रीमा ने संतुष्टि भरी दृष्टि से सबको देखा, फिर वह भी अपने काम में लग गई।

थोड़ी देर बाद दिवेश रसोई में आए और रीमा के हाथों में एक पैकेट थमाते हुए बोले, 'सबका ध्यान रखना और सबसे प्यार करना अच्छी बात है, लेकिन थोड़ा अपने बारे में भी सोचना पाप नहीं। मैं तुम्हारे लिए अच्छी सी ड्रेस लेकर आया हूं। तुम यही ड्रेस पहन कर अपने सेमिनार में जाना। मैंने तुम्हारे जाने का टिकट बुक कर दिया है।'

'लेकिन बच्चे..!' रीमा ने पूछा।

'हम लोग रह लेंगे मम्मा। बड़े हो गए हैं हम भी। पापा ने हमें सब बता दिया है।' पीछे से बच्चों की आवाज आई।

'हां बिल्कुल! आज मैं, कल को बच्चे अपने सेमिनार और दूसरे कामों से बाहर जाएंगे ही। फिर तुम क्यों सब कुछ छोड़ती रहो! बेझिझक जाओ।' दिवेश बोले।

रीमा का चेहरा खुशी से खिल उठा। अपने सपनों को पंख लगते देख उसकी आंखें छलछला उठीं। *

-अलका 'सोनी'

हार्दिक शुभकामनाएं !

'शांति आधे घंटे की छुट्टी मिली है...जल्दी से रोटी खा ले, वरना ठेकेदार चिल्लाएगा।' बेला ने कहा।

'चिल्लाए तो... चिल्लाने दे। पहले मैं अपनी बेटी को दूध पिलाऊंगी...उसे भी तो भूख लग रही होगी।' शांति अपनी छह महीने की बच्ची को गोद में उठाते हुए बोली। कलेजे के टुकड़े को दूध पिलाकर लाड़ लड़ाते-लड़ाते कब आधा घंटा बीत गया...शांति को पता ही नहीं चला।

एआई इमेज

'अरी शांति की बच्ची... चल उठ काम पर लग जा देखती नहीं पांच मिनट ऊपर हो गए हैं...।' ठेकेदार चिल्लाया।

बेला बीच में बोल पड़ी, 'ठेकेदार जी, अभी शांति ने रोटी नहीं खाई है बच्ची को दूध पिला रही थी बेचारी...।'

'चल तू अपना काम कर... फालतू की पंचायत मत कर।'

ठेकेदार ने बेला को डांटा।

उसी समय एक सफेद चमचमाती कार आकर रुकी। उसमें से एक भद्र महिला बाहर निकली। ठेकेदार दौड़ता हुआ उसके पास पहुंचा। उन्हें एक गुलदस्ता देते हुए बोला, 'मैडम, महिला दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।' *

-गोविंद भारद्वाज

घरेलू महिला

'आशी को बस घरेलू काम आते हैं। देखो, इस कमरे को कैसा चमका रखा है।' आशी का पति पवन अपने दोस्तों के साथ गपशप करते हुए बोला।

आशी इन दिनों एक परिचित के विवाह समारोह में शामिल होने शहर से बाहर गई हुई थी। पवन ने घर पर दोस्तों के साथ गपशप के बाद सबको विदा किया ही था कि आशी का फोन आया। वह पति से बोली, 'पवन, बस कुछ मिनटों का एक काम है। पूजा घर में एक हरी फाइल रखी है। उसे निकालकर देख लो और पॉलिसी की किश्त जमा कर देना जरा।'

इतना कहकर और बाकी हाल-चाल पूछकर आशी ने फोन काट दिया।

पवन को झुंझलाहट हुई, अब तक पॉलिसी के रुपए आशी ही जमा करती रही थी। 'अजीब है यह आशी भी, इतना सा काम नहीं होता इससे।' बड़बड़ करता पवन पूजा घर में पहुंचा।

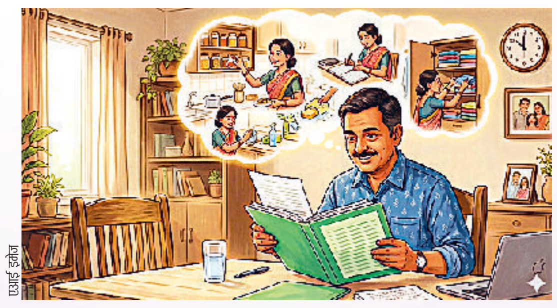

एआई इमेज

हरी फाइल एक नजर में ही ऊपर रखी दिख गई। उसने फाइल को खोला। ऊपर ही वह पॉलिसी रखी थी। उसके बाद उत्सुकता से पवन ने पूरी फाइल पलटकर देख ली। एक-एक कागज को करीने से उसमें रखा गया था। एक सूची भी अलग से बना रखी थी कि किस साल कौन-सी पॉलिसी मैच्योर हो रही हैं। इतना ही नहीं एक छोटी-सी नोटबुक में पासवर्ड भी लिखे थे। आशी को पवन बस घरेलू महिला ही मानता था। लेकिन उसका तो हर काम इतना सलीके से होता है। पवन ने पॉलिसी के रुपए जमा कर दिए। फाइल को करीने से यथास्थान रख दिया।

अब वह अपने शेल्फ को ठीक कर रहा था। जहां उसने अपने निजी कागज कचरे की तरह यहां-वहां घुसा रखे थे। *

-पूनम पांडे

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

स्त्री केंद्रित कहानियां

समाज के दमित, शोषित और वंचित वर्ग के साथ ही मुशी प्रेमचंद ने स्वाधीनता से पहले स्त्रियों की सामाजिक दशा पर भी कई मर्मस्पर्शी कहानियां लिखी हैं। उनके द्वारा लिखी गई सोलह स्त्री केंद्रित कहानियों का संकलन हाल में पल्लव के संपादन में छपकर आया है। इन कहानियों से गुजरते हुए स्त्री जीवन की अलग-अलग छवियां प्रकट होती हैं। अपनी कहानियों में उन्होंने मुख्य तौर पर अन्याय, अनाचार और शोषण के विरुद्ध अपना स्वर बुलंद करने वाले स्त्री पात्रों को ही रचा है। फिर वो चाहे 'कुसुम' कहानी की मुख्य पात्र कुसुम हो, जो विवाह होने के बाद भी दहेज के विरोध में आक्रोश प्रकट करते हुए दांपत्य के बंधन को तोड़कर स्वतंत्र रहने के लिए तैयार हो जाती है या 'सती' कहानी की विधवा मुलिया हो, जो अपनी अस्मिता पर कुदृष्टि रखने वाले का पूरी दृढ़ता से प्रतिकार करती है। या फिर 'विध्वंस' कहानी की भुनगी, जो अपने परिश्रम का वाजिब मूल्य मांगने से नहीं झिझकती है। कह सकते हैं कि लगभग एक सदी पहले के संकीर्ण और परंपरावादी सोच से ग्रस्त भारतीय समाज में भी प्रेमचंद की कहानियां, स्त्री सशक्तिकरण की आवाज बुलंद करती हैं। *

पुस्तक: प्रेमचंद की स्त्री कथाएं,
संपादन: पल्लव, **मूल्य:** 250 रुपए,
प्रकाशक: राजपाल एंड संस, दिल्ली

गोवा की लोक-संस्कृति का रंगोत्सव शिग्मो

विगत 5 मार्च से आरंभ हुआ गोवा का शिग्मो उत्सव, आगामी 18 मार्च तक आयोजित होगा। यह गोवा की सांस्कृतिक पहचान है। यह उत्सव स्थानीय निवासियों की सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करता है और उन्हें अपनी परंपरा पर गर्व करने का अवसर भी देता है। इस उत्सव की कुछ प्रमुख विशेषताओं पर एक नजर।

सांस्कृतिक पर्व
धीरज बसाक

भारत के पश्चिमी तट पर स्थित गोवा, अपनी समुद्र तटीय सुंदरता के कारण पर्यटकों के बीच जितना लोकप्रिय है, उतना ही अपने समृद्ध लोक संस्कृति के कारण भी यह प्रसिद्ध है। गोवा लोक संस्कृति का सबसे समृद्ध घर माना जाता है और इस समृद्ध लोक संस्कृति का सबसे जीवंत और रंगीन प्रतीक है शिग्मो फेस्टिवल या शिग्मो उत्सव। शिग्मो उत्सव केवल एक वार्षिक पर्व भर नहीं है, बल्कि गोवा के ग्रामीण जीवन, लोक परंपराओं, लोक नृत्यों और ऐतिहासिक स्मृतियों का संवेदनशील और सामूहिक उत्सव भी है।

वसंत के आगमन का उत्सव

वास्तव में शिग्मो, गोवा का पारंपरिक वसंत उत्सव है, जो होली से शुरू होकर चैत्र माह में एक पखवाड़े तक मनाया जाता है। इसलिए शिग्मो उत्सव को गोवा की लोक आत्मा का उत्सव कहते हैं। क्योंकि इसमें यहां के किसान, मजदूर और ग्रामीण समुदायों की जीवनशैली, उनकी आस्था और उनकी ऐतिहासिक चेतना पूरी भव्यता के साथ अभिव्यक्त होती है। शिग्मो का अर्थ है शिशिरोत्सव अर्थात शीत ऋतु के अंत और वसंत के आगमन का उत्सव। यह पर्व प्राचीन काल से गोवा के कुछ समुदायों द्वारा मनाया जाता रहा है। फसल कटाई के बाद जब किसान अपनी मेहनत के फल से संतुष्ट होते हैं तो प्रकृति और देवताओं के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए शिग्मो उत्सव मनाते हैं।

एक हजार साल पुराना उत्सव

इतिहासकारों के मुताबिक शिग्मो उत्सव मनाने की परंपरा कम से कम 1000 साल पुरानी है। पुर्तगाली शासन के दौरान भी गोवा के स्थानीय लोगों ने इस उत्सव को अपनी सांस्कृतिक पहचान के रूप में बनाए रखा। वास्तव में यह उत्सव गोवा के हिंदू समुदाय के लिए विशेष मायने रखता है। लेकिन इसकी लोक-रंगत और सांस्कृतिक आकर्षण के कारण आज इसमें सभी समुदायों की भागीदारी होती है।

कई लोकनृत्यों का आयोजन

शिग्मो उत्सव की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें पारंपरिक लोकनृत्य और संगीत के भव्य आयोजन होते हैं। इन नृत्यों में गोवा के ग्रामीण जीवन, युद्ध कथाओं, पौराणिक प्रसंगों और सामाजिक घटनाओं को प्रस्तुत किया जाता है। शिग्मो उत्सव में शामिल प्रमुख लोक नृत्यों में घोड़े मोदनी नृत्य सबसे प्रमुख है। वास्तव में यह योद्धाओं का नृत्य होता है। माना जाता है कि प्राचीनकाल में विजयी योद्धा, घोड़ों पर सवार होकर नृत्य किया करते थे। लेकिन आज लोक कलाकार घोड़े की मुखाकृति के मुखौटे पहनकर और हाथ में तलवार लेकर नृत्य करते हैं। यह नृत्य वास्तव में गोवा के गौरवमयी इतिहास का प्रतीक है। इस उत्सव का दूसरा प्रमुख नृत्य हैं-रोमातामेल। यह सामूहिक नृत्य है, इसमें कलाकार ढोल, ताशा और झांझे की धुन पर नाचते हैं। इनके अलावा जो प्रमुख नृत्य इस उत्सव में खूब देखने को मिलते हैं, उसे फुगड़ी और जागर नृत्य कहते हैं। ये नृत्य गोवा के ग्रामीण और आदिवासी जीवन को दर्शाते हैं। इन प्रमुख नृत्यों के माध्यम से गोवा में लोग शिग्मोत्सव में सदियों से चली आ रही अपनी सांस्कृतिक विरासत को जीवंत करते हैं।

निकलती हैं भव्य झांकियां

शिग्मो उत्सव के दौरान गोवा के प्रमुख शहरों जैसे पणजी, मडगांव, वास्को, पोंडा और मापुसा में भव्य शोभा यात्राएं भी निकाली जाती हैं। इन शोभा यात्राओं में रंग-बिरंगी झांकियां होती हैं, जो पौराणिक कथाओं, ऐतिहासिक घटनाओं और सामाजिक विषयों को दर्शाती हैं। इन झांकियों में रामायण और महाभारत के दृश्य, गोवा के लोक देवताओं की कथाएं, पर्यावरण संरक्षण व सामाजिक जागरूकता के संदेश दिए जाते हैं। यह परंपरा आधुनिक, सामाजिक चेतना का अनूठा मिश्रण प्रस्तुत करती है।

ग्रामीण और शहरी शिग्मो

ग्रामीण और शहरी शिग्मो उत्सव वैसे एक-दूसरे से थोड़े भिन्न होते हैं, लेकिन ये दो रूप भले अलग हों, लेकिन उनकी आत्माएं एक होती हैं। इन दो अलग-अलग यानी शहरी और ग्रामीण शिग्मो को क्रमशः धाकटो शिग्मो यानी छोटा शिग्मो और व्हाडलो शिग्मो यानी बड़ा शिग्मो कहा जाता है। छोटा शिग्मो ग्रामीण क्षेत्रों में मनाया जाता है, जो ज्यादा पारंपरिक होता है और बड़ा शिग्मो, शहरी क्षेत्रों में आयोजित होता है और इसमें बड़े पैमाने पर सांस्कृतिक झांकियां और शोभा यात्राएं निकाली जाती हैं। ग्रामीण शिग्मो में ज्यादा पारंपरिक और धार्मिक तत्व शामिल होते हैं, जबकि शहरी शिग्मो में पर्यटन और बहु-सांस्कृतियों का प्रदर्शन अधिक होता है, क्योंकि शहरी शिग्मो में बड़े पैमाने पर यहां आने वाले पर्यटक भी हिस्सा लेते हैं।

संस्कृति-संरक्षण का माध्यम

शिग्मो उत्सव केवल एक पारंपरिक लोक त्योहार भर नहीं बल्कि गोवा की सांस्कृतिक धड़कन है। शिग्मो के रंग, संगीत और नृत्य गोवा के लोगों की आत्मा को अभिव्यक्त करते हैं। इसके जरिए पीढ़ियों से चली आ रही लोक परंपराओं को संरक्षण मिलता है। यह विभिन्न समुदायों के बीच एकता और सहयोग की भावना बढ़ाता है। यह महोत्सव युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति से जोड़ता है। आज के आधुनिक और वैश्विक युग में जब कई पारंपरिक उत्सव अपनी पहचान खो रहे हैं, तब शिग्मो उत्सव गोवा की सांस्कृतिक निरंतरता का पर्याय बन गया है। *

क्या आप अपने जीवन में लक्ष्य निर्धारित करते हैं, लेकिन इसे प्राप्त नहीं कर पाते? ऐसे में यह जानना बहुत जरूरी है कि किन वजहों से आप अपने लक्ष्य से दूर रह जाते हैं और किन बातों का ध्यान रखकर अपने लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है, जानिए।

आप क्यों रह जाते हैं अपने लक्ष्य से दूर

सेल्फ मोटिवेशन
शिखर चंद जैन

कई लोग प्लान बनाते हैं, लक्ष्य भी तय करते हैं, लेकिन उन्हें कभी अचीव ही नहीं कर पाते। हम सभी जानते हैं कि जीवन में सफलता की पहली सीढ़ी है- लक्ष्य का निर्धारण। लक्ष्य वह मार्गदर्शक है, जो हमें भीड़ में खोने से बचाता है और चुनौतियों से लड़ने का साहस देता है। किसी भी महान कार्य की शुरुआत एक छोटे से संकल्प से ही होती है, जो आगे चलकर एक स्पष्ट लक्ष्य का रूप ले लेता है।

सोचना पर्याप्त नहीं: 'मैं यह करना चाहता हूं' ऐसा सोचकर लक्ष्य बनाना काफी नहीं है। स्पष्टता ही लक्ष्य की प्राप्ति में सफलता की पहली शर्त है। जब आप गहराई से समझ लेते हैं कि आप कौन हैं, आप वास्तव में क्या चाहते हैं और आपको कहां पहुंचना है, तभी आप एक सामान्य व्यक्ति की तुलना में दस गुना अधिक व तेज उपलब्धियां हासिल कर सकते हैं। लक्ष्य केवल एक मंजिल नहीं, बल्कि वह उत्तरदायित्व है, जो हमारे समय और ऊर्जा को सही दिशा देता है।

स्वयं का करें आकलन: स्वास्थ्य, आनंद, रिश्ते और वित्तीय स्वतंत्रता, ये जीवन के चार स्तंभ हैं, जिन्हें संतुलित करके आप असाधारण सफलता पा सकते हैं। जब आप इन चार क्षेत्रों में से हर एक में खुद को 1 से 10 अंक देकर ईमानदारी से आकलन करते हैं तो आपको तुरंत समझ आने लगता है कि आपके जीवन की सबसे ज्यादा समस्याएं किस क्षेत्र से जुड़ी हैं? जाहिर है, वहीं जहां आपका स्कोर कम होता है। यानी उसी बिंदु पर सबसे अधिक फोकस करने की जरूरत होती है।

अपना दृष्टिकोण तय करें: लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में आपकी मानसिकता दो तरह की हो सकती है, समृद्धि का दृष्टिकोण या अभाव का दृष्टिकोण। समृद्धि का दृष्टिकोण आपको आत्मविश्वासी, सकारात्मक और समाधान केंद्रित बनाता है। आप दुनिया को अवसरों से भरा मानते हैं और यह विश्वास रखते हैं कि जीवन में आगे बढ़ने का अच्छा समय है। आप में यह जागरूकता बनी रहती है कि दुनिया में चुनौतियां हमेशा थीं, हैं और रहेंगी। मगर आप अपनी ऊर्जा इस बात पर केंद्रित रखते हैं कि क्या बेहतर किया जा सकता है? यह सोच आपको रचनात्मक, सक्रिय और लक्ष्य उन्मुख बनाती है। वास्तव में लक्ष्य केवल एक मंजिल नहीं, बल्कि ऐसा उत्तरदायित्व है, जो हमारे समय और ऊर्जा को सही दिशा देता है। जब इंसान की आंखों में एक स्पष्ट स्वप्न और उसे पाने का दृढ़ निश्चय होता है, तो वह साधारण से असाधारण बनने का सफर शुरू कर देता है। इसके विपरीत दूसरा दृष्टिकोण आपको सीमित कर देता है। इसमें आप किस्मत के भरोसे बैठ जाते हैं और तरह-तरह के बहाने बनाने लगते हैं। इस दृष्टिकोण से कभी कुछ हासिल नहीं हो पाता है।

लक्ष्य पर शिद्दत से टिके रहें: अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए यह जानना भी जरूरी है कि आप इन्हें क्यों हासिल करना चाहते हैं? अगर यह केवल सतही कारणों से या दूसरों की उम्मीद पर खरा उतरने के लिए है तो आप उसके प्रति गंभीर नहीं हो पाएंगे। इसकी बजाय स्पष्ट रूप से यह जानें कि इन लक्ष्यों का आपके आर्थिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, पारिवारिक या व्यक्तिगत जीवन पर क्या असर पड़ने वाला है? इससे आपको अपने लक्ष्य पर टिके रहने का हौसला मिलेगा।

मुश्किल लक्ष्यों को आसान बनाएं: अपने लक्ष्यों को सफल बनाने के लिए उन्हें स्पष्ट और छोटे हिस्सों में विभाजित कर लें। उन्हें प्रबंधनीय और ठोस कदमों में विभाजित करें। साथ ही अपने लक्ष्यों को निर्धारित समय और प्राथमिकता दें। उन्हें अपने कैलेंडर में किसी महत्वपूर्ण बैठक की तरह रखें और तय समय पर उन्हें पूरा करने की कोशिश करें। हां, अपने संकल्पों के रास्ते में जरा लचीले भी रहें, क्योंकि जीवन में हमेशा उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। योजनाओं में आवश्यकता के अनुसार बदलाव करें। किसी गलती या असफलता पर झुंझलाने या हार मानने की बजाय खुद को माफ करें और आगे बढ़ें। अपनी प्रगति की समीक्षा भी करते रहें। *

समझ लें सटीक फॉर्मूला

आपके लक्ष्य छोटे हों या बड़े, उनमें सफलता जरूर मिलेगी अगर आप अपने लक्ष्य को निर्धारित करने और उसे पाने का सही फॉर्मूला जान लें। इसके लिए कुछ बातों को समझ लें।

- लक्ष्य की कोई डेडलाइन ना हो तो वह सिर्फ एक कल्पना या सपना मात्र बनकर रह जाता है। इसलिए हर लक्ष्य की एक समय सीमा तय करें।
- लक्ष्य और समय सीमा तय हो जाए तो वह आपका उद्देश्य बन जाता है। इसे पूरा करने की योजना बनाएं।
- लक्ष्य पाने के लिए आपको निरंतरता का भी ध्यान रखना होगा। यानी आपको नियमित रूप से अपने लक्ष्य को हासिल करने में जुटा रहना पड़ेगा।

आगामी 10 मार्च को सीआईएसएफ का 57वां स्थापना दिवस मनाया जाएगा। देश की महत्वपूर्ण धरोहरों और औद्योगिक प्रतिष्ठानों की सुरक्षा में तैनात केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) के योगदान और भूमिका पर एक नजर।

धरोहरों-औद्योगिक प्रतिष्ठानों का रक्षक सीआईएसएफ

जानकारी
अंजू जैन

आजादी के बाद, भारत में तेजी से विकसित हो रहे सरकारी औद्योगिक उपक्रमों को सुरक्षा प्रदान करने की आवश्यकता थी, जो देश की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण थे। इसके लिए एक मजबूत सुरक्षाबल की जरूरत महसूस की गई। इसी जरूरत को ध्यान में रखते हुए 10 मार्च 1969 को केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल यानी सीआईएसएफ (सेंट्रल इंडस्ट्रियल सिक्योरिटी फोर्स) की स्थापना की गई। भारत की संसद के एक अधिनियम द्वारा इसका गठन किया गया, जो केंद्रीय गृह मंत्रालय के अंतर्गत काम करता है। इस सुरक्षा बल का ध्येय वाक्य है-संरक्षण और सुरक्षा।

प्रमुख कार्य

अपने नाम के मुताबिक ही सीआईएसएफ का प्रमुख आरंभिक कार्य औद्योगिक सुरक्षा ही था। सरकारी कारखानों, परमाणु ऊर्जा संयंत्रों और बिजली संयंत्रों की सुरक्षा का जिम्मा इस बल को दिया गया। बाद में समय-समय पर इसकी जिम्मेदारियां बढ़ती गईं। आगे चलकर यह अर्धसैन्यबल हवाई अड्डों, बंदरगाहों और मेट्रो की सुरक्षा कार्य भी करने लगा। इस बल के जवान देश की ऐतिहासिक इमारतों, स्मारकों और धरोहरों जैसे-लाल किला, ताजमहल आदि की रक्षा भी करते हैं। वीआईपी सुरक्षा के तहत विशिष्ट व्यक्तियों को सुरक्षा प्रदान करना भी इनकी जिम्मेदारी में शामिल है।

बढ़ता संख्या बल

जब 1969 में सीआईएसएफ की शुरुआत हुई थी, तब इसमें सिर्फ 2,800 जवान थे। आज यह दुनिया के सबसे बड़े सुरक्षा बलों में से एक है, जिसमें 2,00,000 (दो लाख) से भी ज्यादा जवान शामिल हैं।

आग बुझाने में भी माहिर

सीआईएसएफ के पास अपना एक खास 'फायर विंग' भी है। यह भारत का अकेला ऐसा सुरक्षा बल है, जिसके पास फैक्ट्रियों और उद्योगों में आग बुझाने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित टीम होती है।

स्मार्ट डॉग स्क्वाड

सीआईएसएफ के पास बहुत ही स्मार्ट डॉग्स की तेजतर्रार स्क्वाड भी है। इनके डॉग्स इतने ट्रेंड होते हैं कि वे छिपी हुई खतरनाक चीजों का पलक झपकते ही पता लगा लेते हैं। कई बार सीआईएसएफ के डॉग स्क्वॉड ने शातिर किस्म की साजिशों का भंडाफोड़ किया है।

एयरपोर्ट सुरक्षा में संलग्न

देश के तमाम एयरपोर्ट्स पर केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल को उनकी विशिष्ट विशेषज्ञता, उन्नत तकनीक के कारण तैनात किया गया है। वे हवाई अड्डे की सुरक्षा के विशेषज्ञ माने जाते हैं, जो यात्रियों की तलाशी, सामान की स्क्रीनिंग और आतंकवाद विरोधी अभियानों में उच्च दक्षता प्रदान करते हैं। इन सैनिकों को विशेष रूप से नागरिक हवाई अड्डों की सुरक्षा के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, जो सामान्य पुलिस या दूसरे अर्धसैनिक बलों के प्रशिक्षण से अलग होती है। सन् 1999 में इंडियन एयरलाइंस की फ्लाइट आईसी-814 के अपहरण के बाद, भारत सरकार ने सुरक्षा मजबूत करने के लिए हवाई अड्डों की सुरक्षा सीआईएसएफ को सौंपने का निर्णय लिया। इसकी शुरुआत फरवरी 2000 में जयपुर हवाई अड्डे से की गई। ये अर्धसैनिक, आधुनिक उपकरणों का उपयोग करके यात्रियों की गहन तलाशी और हैंड बैगेज की जांच सुनिश्चित करते हैं, जो एयरपोर्ट सुरक्षा के लिए अनिवार्य है। ये अंतरराष्ट्रीय विमानन सुरक्षा मानदंडों का पालन करते हैं, जो अन्य सुरक्षा बलों की तुलना में अधिक उपयुक्त हैं। साथ ही इस बल के जवान संभावित खतरों के लिए 24X7 निगरानी करते हैं और त्वरित प्रतिक्रिया टीम के साथ किसी भी आपात स्थिति से निपटने में सक्षम होते हैं। ये एयरपोर्ट के संवेदनशील क्षेत्रों में असामाजिक तत्वों को पकड़ने और किसी भी प्रकार की तस्करी को रोकने में भी माहिर होते हैं। वर्तमान में 70 से अधिक एयरपोर्ट्स पर सीआईएसएफ के जवानों की तैनाती है। यद्यपि अब देश के लगभग 60 हवाई अड्डों पर गैर-प्रमुख ड्यूटी के लिए निजी सुरक्षा गाड्र्स भी लगाए जा रहे हैं, लेकिन प्रमुख सुरक्षा और स्क्रीनिंग का काम अभी भी मुख्य रूप से सीआईएसएफ ही करती है। *

महिलाएं भी नहीं हैं पीछे

देश के अन्य सुरक्षा बलों पुलिस, पीएसी, बीएसएफ और सशस्त्र सैन्य (थल सेना, वायु सेना और नौसेना) बलों की तरह ही सीआईएसएफ में भी महिलाएं अपनी सेवाएं दे रही हैं। वर्तमान में इस अर्धसैन्य बल में लगभग साढ़े बारह हजार यानी आठ प्रतिशत महिलाएं तैनात हैं। सरकार का लक्ष्य जल्द ही इनकी संख्या बढ़ाकर दस प्रतिशत करने का है। मुख्य तौर पर महिलाएं एविएशन सुरक्षा, क्विक रिएक्शन टीम और सीआईएसएफ कमांडो टीम में शामिल होकर अपनी सेवाएं दे रही हैं। किसी भी अन्य सेंट्रल आर्म्ड पुलिस फोर्सेस की तुलना में सीआईएसएफ में सबसे अधिक महिलाएं कार्यरत हैं।

स्त्रियों के संघर्ष और उसके सशक्तिकरण को शुरुआती दौर से ही हिंदी फिल्मों का विषय बनाया जाता रहा है। आज महिला दिवस के अवसर पर हम आपको कुछ ऐसी फिल्मों के बारे में बता रहे हैं, जिनमें स्त्री संघर्ष और उसके सशक्तिकरण को प्रमुखता से उभारा गया है।

फिल्मों में खूब दिखीं महिला संघर्ष-शक्ति की कहानियां

सिने ट्रेंड
अशोक जोशी

हिंदी सिनेमा की विकास यात्रा में स्त्रियों का उल्लेखनीय योगदान रहा। जिन दिनों सिनेमा की शुरुआत हो रही थी, उसमें महिलाओं का काम करना अघोषित रूप से प्रतिबंधित माना जाता था। तब पुरुष कलाकार ही नारी का स्वांग भर पर्दे पर नजर आया करते थे। लेकिन कुछ समय बाद पर्दे पर नायिकाओं के पर्दापण से अब तक स्त्री कलाकार, सिनेमा का सबसे अनिवार्य हिस्सा बन गई हैं। फिल्मों में समय-समय पर नारी जीवन से जुड़ी समस्याएं, संघर्ष और उनके सशक्तिकरण जैसे विषयों को गंभीरता से प्रदर्शित किया जाता रहा है।

बेमेल विवाह की समस्या: हिंदी सिनेमा में वी. शांताराम, नारी समस्याओं को पर्दे पर सशक्त तरीके से उठाने वाले फिल्मकार थे। उनकी 1937 में प्रदर्शित फिल्म 'दुनिया न माने' बेमेल विवाह की समस्या पर केंद्रित थी। यह फिल्म स्त्रीत्व की गरिमा को बेहद खूबसूरती से उभारती है। शांता आप्टे ने नायिका नीरा की भूमिका में प्राण फूंक दिए थे। नारी को भोग्या, चरणों की दासी और वस्तु मानने वालों को यह फिल्म प्रभावी सबक सिखाती है।

जातिगत विसंगतियों पर कटाक्ष: 1936 में प्रदर्शित फिल्म 'अछूत कन्या' सवर्ण लड़के और अछूत लड़की की एक दारुण प्रेम कहानी है। यह एक दुःखांत फिल्म है। इस वर्जित और उपेक्षित विषय को पहली बार फिल्म के माध्यम से लोगों के बीच लाने का साहसिक प्रयास किया गया था। इससे मिलते-जुलते विषय पर 1959 में विमल राय ने 'सुजाता' बनाई, जो फिर से अछूत युवती और सवर्ण युवक के प्रेम की कहानी है। विमल राय की यह फिल्म आजादी के बाद इस विषय पर बनाई गई पहली फिल्म थी। इस फिल्म के एक दृश्य में रवींद्रनाथ ठाकुर कृत नाटक 'चांडालिका' का मंचन किया जाता है। इस नाटक में भगवान बुद्ध अछूत स्त्री के हाथों से पानी पीते हैं और सभी जातियों की समानता को व्याख्यायित करते है। राजकपूर और मीना कुमारी की ख्वाजा अब्बास निर्देशित फिल्म 'चार दिल चार राहें' की कहानी भी ऐसे ही विषय के इर्द-गिर्द घूमती है। इसी क्रम में श्याम बेनेगल की फिल्में 'अंकुर', 'भुवन शोम', 'मृगया', 'भूमिका', 'मंडी', 'चक्र' आदि में हाशिए पर धकेल दी गई स्त्रियों की सामाजिक स्थिति की दर्दमय झांकी प्रस्तुत की गई हैं।

दिखे स्त्री संघर्ष के विविध रूप: हिंदी फिल्मकारों ने भारतीय स्त्री के सभी रूपों को अपनी फिल्मों में प्रस्तुत किया है। घरेलू स्त्री, कामकाजी स्त्री, किसान स्त्री, विवाहित और अविवाहित स्त्री, जुझारू स्त्री, संघर्षशील स्त्री और अन्याय, अत्याचार से लड़ने वाली स्त्री के कई रूप हिंदी फिल्मों में नजर आते रहे हैं। महबूब खान द्वारा निर्देशित फिल्म 'औरत' और उसका संशोधित संस्करण 'मदर इंडिया' भारतीय नारी के संघर्ष और त्रासदी की महागाथा है, जिसमें ग्रामीण महाजनी सभ्यता की क्रूरता और अत्याचार से लड़ती हुई नारी की मार्मिक कहानी है। ग्रामीण सामंती अत्याचार से उत्पन्न डाकू समस्या को उजागर करने वाली फिल्मों में नारी की विवशता को 'मुझे जीने दो', 'गंगा जमुना', 'जिस देश में गंगा बहती है' और शेखर कपूर की 'बैंडिट क्वीन' में प्रभावी ढंग से पर्दे पर उतारा गया है।

राजकुमार संतोषी की फिल्म 'लज्जा' में समाज के अलग-अलग परिवेशों से आने वाली तीन स्त्री पात्रों के दारुण शोषण और मुक्ति के संघर्ष को दर्शाया गया है। इनकी ही फिल्म 'दामिनी' में बलात्कार से पीड़ित घर की एक नौकरानी को न्याय दिलाने की कहानी को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत किया गया है।

आर.के. बैनर की फिल्मों में स्त्री: राजकपूर द्वारा निर्मित-निर्देशित फिल्मों में भी स्त्री जीवन और संघर्ष के विविध रूप सामने आते हैं। 'सत्यम शिवम सुंदरम', 'राम तेरी गंगा मैली' जैसी फिल्मों में जहां नारी के संघर्ष की अलग-अलग दास्तानें दिखती हैं, वहीं 'प्रेमरोग' में आभिजात्य परिवार की विधवा युवती का विवाह सामान्य वर्ग के युवक से करवाकर सामाजिक विषमता को मिटाने की पहल की गई।

बी.आर. चोपड़ा की फिल्मों में स्त्री संघर्ष: फिल्मों में नारी की स्थिति का चित्रण करने में बी. आर. चोपड़ा का भी उल्लेखनीय योगदान रहा है। 1956 में उन्होंने फिल्म 'एक ही रास्ता' में विधवा विवाह करवाकर सामाजिक सुधार का संदेश दिया। 'साधना' (1958) समाज में वेश्याओं की स्थिति और उसके प्रति सामाजिक नजरिए पर प्रकाश डालने में सफल रही। साल 1959 में उन्होंने अविवाहित मातृत्व की समस्या से जूझने वाली स्त्रियों के जीवन के बिखराव और उसकी परिणति को दर्शाने वाली सशक्त फिल्म 'धूल का फूल' का निर्माण किया। 'इंसाफ का तराजू' (1980) में बलात्कार से पीड़ित लड़की की कहानी को साहसिक रूप से प्रस्तुत किया। 1982 में फिल्म 'निकाह' में उन्होंने तलाक और हलाला जैसे विषयों को छूने का प्रयास किया।

नारी संघर्ष की दास्तान सुनाती कुछ और फिल्में: बॉलीवुड में स्त्रियों के संघर्ष और नारी सशक्तिकरण पर तमाम बेहतरीन फिल्में बनी हैं। 'खून भरी मांग', 'मृत्युदंड', 'वारिस', 'थप्पड़', 'कहानी', 'लापता लेडीज', 'गंगूबाई काठियावाड़ी', 'नीरजा', 'क्वीन', 'गुलाब गैंग', 'इंग्लिश-विंग्लिश', 'पिंक', 'दंगल', 'छपाक', 'मर्दानी', 'गुंजन सक्सेना' जैसी कितनी ही फिल्में हैं, जो स्त्री संघर्ष, स्त्री सशक्तिकरण सहित स्त्री जीवन के विविध पहलुओं को छूती हैं। *